गुणात्मक रिपोर्ट

खण्ड 20 । क्रमांक 2 शिक्षण और अधिगम 12

2-23-2015

शिक्षा में केस स्टडी प्रविधियों के तीन दृष्टिकोण : यिन, मेरियम, और स्टेक (Yin, Merriam, and Stake)

बेडरैटिन याज़न (Bedrettin Yazan)
यूनिवर्सिटी ऑफ़ अलाबामा, byazan@ua.edu

शिक्षा में केस स्टडी प्रविधियों के तीन दृष्टिकोण : यिन, मेरियम, और स्टेक (Yin, Merriam, and Stake)

सार

केस स्टडी प्रविधि लम्बे समय से सामाजिक विज्ञान शोध में एक विवादित क्षेत्र रही है जो कई शोध प्रविधिकारों द्वारा समर्थित विभिन्न व कभी-कभी विरोधाभासी दृष्टिकोणों द्वारा लक्षित है। शैक्षिक शोध में सबसे ज्यादा उपयोग की जाने वाली गुणात्मक शोध प्रविधियों में से एक होने के बावजूद, प्रविधिकारों में केस स्टडी के डिज़ाइन और क्रियान्वयन पर पूर्ण सहमति नहीं है, जो इसके पूर्ण विकास (evolution) को बाधित करता है। मैं तीन प्रमुख प्रविधिकारों नामत: रॉबर्ट यिन, शरन मेरियम, रॉबर्ट स्टेक (Robert Yin, Sharan Merriam, Robert Stake) की उन रचनाओं पर ध्यान केन्द्रित करूँगा जो मील का पत्थर साबित हुई हैं। इस सन्दर्भ में, मैं उन क्षेत्रों की छानबीन करने का प्रयास करूँगा जहाँ उनके परिप्रेक्ष्य केस स्टडी शोध के विभिन्न आयामों में एक दूसरे से भिन्न, समान व पूरक हैं। मेरा उद्देश्य शिक्षा के क्षेत्र में उभरते शोधकर्ताओं को केस स्टडी के बारे में ऐसी कई प्रकार की तकनीकों और रणनीतियों से सम्बन्धित विविध विचारों से परिचित कराना है। वे इससे एक ऐसा मिला जुला परिप्रेक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं जो उनके शोध के उद्देश्य को सबसे अच्छे तरीके से पूरा करता हो।

क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस

आभार

मै अपनी प्रिय प्रोफ़ेसर डॉ. बैटी मेलन (Dr. Betty Malen) का आभारी हूँ, जिन्होंने इस शोध पत्र के पहले मसौदे पर अपनी टिप्पणियाँ दीं और पूरी प्रक्रिया के दौरान अपना मूल्यवान सहयोग दिया। मैं इस समीक्षा और रचनात्मक फीडबैक के लिए टीक्यूआर के प्रधान सम्पादक डॉ. रोनाल्ड चेनेल (Dr. Ronald Chenail) का भी आभारी हूँ, जिसके कारण यह शोध पत्र और प्रभावशाली हो पाया है।

शिक्षा में केस स्टडी प्रविधियों के तीन दृष्टिकोण : यिन, मेरियम और स्टेक

बेडरैटिन याज़न (Bedrettin Yazan)

यूनिवर्सिटी ऑफ़ अलाबामा, टस्कलूसा, अलाबामा

केस स्टडी प्रविधि लम्बे समय से सामाजिक विज्ञान शोध में एक विवादित क्षेत्र रही है जो कई शोध प्रविधिकारों द्वारा समर्थित विभिन्न व कभी-कभी विरोधाभासी दृष्टिकोणों द्वारा लक्षित है। शैक्षिक शोध में सबसे ज्यादा उपयोग की जाने वाली गुणात्मक शोध प्रविधियों में से एक होने के बावजूद, प्रविधिकारों में केस स्टडी के डिज़ाइन और क्रियान्वयन पर पूर्ण सहमति नहीं है, जो इसके पूर्ण विकास (evolution) को बाधित करता है। मैं तीन प्रमुख प्रविधिकारों नामत: रॉबर्ट यिन, शरन मेरियम, रॉबर्ट स्टेक (Robert Yin, Sharan Merriam, Robert Stake) की उन रचनाओं पर ध्यान केन्द्रित करूँगा जो मील का पत्थर साबित हुई हैं। इस सन्दर्भ में, मैं उन क्षेत्रों की छानबीन करने का प्रयास करूँगा जहाँ उनके परिप्रेक्ष्य केस स्टडी शोध के विभिन्न आयामों में एक दूसरे के भिन्न, समान व पूरक हैं। मेरा उद्देश्य शिक्षा के क्षेत्र में उभरते शोधकर्ताओं को केस स्टडी के बारे में ऐसे कई प्रकार की तकनीकों और रणनीतियों से सम्बन्धित विविध विचारों से परिचित कराना है। वे इससे एक ऐसा मिला जुला परिप्रेक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं जो उनके शोध के उद्देश्य को सबसे अच्छे तरीके से पूरा करता हो। मुख्य शब्द : गुणात्मक शोध, केस स्टडी प्रविधियाँ, ज्ञानमीमांसीय आधार।

केस स्टडी प्राय: सर्वाधिक उपयोग की जाने वाली गुणात्मक शोध प्रविधियों में से एक है। हालाँकि, इसकी अभी भी सामाजिक विज्ञान शोध रणनीति के रूप में एक विधि सम्मत स्थिति नहीं है क्योंकि इसमें सुपरिभाषित और सुसंगठित प्रोटोकॉल नहीं हैं (यिन, 2002), इसलिए उभरते हुए शोधकर्ता जो केस स्टडी का उपयोग करने की योजना बनाते हैं, आमतौर पर भ्रमित

हो जाते हैं “कि केस स्टडी क्या है और इसे अन्य प्रकार के गुणात्मक शोध से कैसे अलग किया जा सकता है” (मेरियम, 1998, पृष्ठ xi)। शोध प्रविधिकारों के पास केस स्टडी के डिज़ाइन और क्रियान्वयन पर एक आम सहमति नहीं है, जो इसे विवादित क्षेत्र बनाता है और इसके पूर्ण विकास को अवरुद्ध करता है। इस शोध पत्र में, मेरा उद्देश्य शैक्षिक शोध के क्षेत्र में केस स्टडी प्रविधि के उपयोग पर तीन प्रमुख प्रविधिकारों नामत: रॉबर्ट के. यिन, शरन मेरियम, और रॉबर्ट ई. स्टेक के विभिन्न दृष्टिकोणों का विश्लेषण और संश्लेषण प्रस्तुत करना है। मैं इन पुस्तकों पर ध्यान केन्द्रित करूँगा : रॉबर्ट के. यिन की *केस स्टडी रिसर्च : डिज़ाइन एंड मेथड्स* (Case Study Research: Design and Methods, 2002), शरन बी. मेरियम की *क्वालिटेटिव रिसर्च एंड केस स्टडी एप्लिकेशन्स इन एजुकेशन* (Qualitative Research and Case Study Applications in Education, 1998), और रॉबर्ट ई. स्टेक की *द आर्ट ऑफ़ केस स्टडी रिसर्च* (The Art of Case Study Research, 1995)।

मैंने निम्नलिखित कारणों से इन तीन प्रविधिकारों और उनकी खास पुस्तकों का चयन किया है। सबसे पहला कारण यह है कि यिन, मेरियम और स्टेक तीन ऐसे प्रमुख लेखक हैं, जो केस स्टडी शोध का संचालन करते समय अनुसरण की जाने वाली प्रक्रियाएँ उपलब्ध कराते हैं (क्रेसवेल, हैनसन, प्लानो, और मोरेल्स [Creswell, Hanson, Plano, & Morales], 2007) जो कि शैक्षिक शोधकर्ताओं को केस स्टडी में उनके उपयोग के लिए दिशा निर्देश के निर्माण में सहायक होती हैं। उन्हें केस स्टडी शोध के क्षेत्र में तीन मूलभूत प्रविधिकारों के रूप में देखा जाता है जिनके प्रविधि सम्बन्धित सुझाव केस स्टडी डिज़ाइन से सम्बन्धित शैक्षिक शोधकर्ताओं के निर्णयों को काफी हद तक प्रभावित करते हैं। दूसरा, नए गुणात्मक शोधकर्ताओं के अधिक व्यापक दर्शकों के लिए केस स्टडी पर पूर्व में किए गए कार्यों में डिज़ाइन (बैक्स्टर एंड जैक [Baxter & Jack], 2008), परिचय (टेलिस [Tellis], 1997ए), व केस स्टडी प्रविधि का उपयोग (टेलिस, 1997बी) विस्तृत रूप से करना बताया गया है। मेरा मानना है कि यह शोध पत्र प्रमुख शोध प्रविधिकारों द्वारा उपलब्ध कराए गए केस स्टडी के विभिन्न विचारों और अवधारणाओं का एक वर्णक्रम (spectrum) अलग-अलग नजरियों (vantage points) से प्रदर्शित करेगा जिससे नए शोधकर्ताओं के लिए यह फायदेमन्द और फलदायी होगा। यह अनावरण उन्हें इस वर्णक्रम में अपनी समझ बनाने या उसे स्थापित करने में मदद करेगा ताकि वे एक भरोसेमन्द और रक्षात्मक डिज़ाइन के साथ अपने शोध का संचालन कर सकें। इसलिए, मैं इन तीन विशिष्ट अवस्थितियों में गठित डिज़ाइन के मुद्दों पर केस स्टडी प्रविधि को अपसारिता, अभिसारिता और पूरकता के बिन्दुओं के माध्यम से प्रस्तुत करूँगा। अन्त में, मैंने उनकी खास पुस्तकों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए इस शोध पत्र में तुलना करने का विकल्प चुना है क्योंकि इन मौलिक पुस्तकों में उन्होंने बड़ी ईमानदारी से केस स्टडी शोध की उसके हर चरण में, कैसे उसको संकल्पित

किया जाना है से लेकर कैसे उसे पाठकों तक सम्प्रेषित किया जाना है तक, महत्त्वपूर्ण अन्तर्दृष्टियाँ बताते हुए उसकी सम्पूर्णता से व्याख्या की है। इस प्रकार, इस शोध पत्र के पाठकों के पास केस स्टडी प्रविधियों की तीन सम्पूर्ण मार्गदर्शिकाओं का एक संश्लेषण और विश्लेषण होगा, जिससे वे उन साधनों का चयन कर सकते हैं जो उनके खुद के शोध उद्देश्यों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त और कार्यात्मक हों।

इस पत्र में, मैं केस स्टडी शोध के विभिन्न आयामों के उन क्षेत्रों की जाँच करने की कोशिश करूँगा, जहाँ ये तीनों परिप्रेक्ष्य एक दूसरे के भिन्न, समान व पूरक हैं। मैं छह श्रेणीगत आयामों का अनुसरण करने जा रहा हूँ, जिसमें तीन शोधकर्ता केस स्टडी प्रणाली की मौलिक विषय वस्तु पर सर्वाधिक समान होते हैं : ज्ञानमीमांसीय प्रतिबद्धताएँ, केस व केस स्टडी को परिभाषित करना, केस स्टडी को डिज़ाइन करना, आँकड़ों का संग्रहण करना, आँकड़ों का विश्लेषण करना, और आँकड़ों का विधिमान्यकरण करना।

शोधकर्ता की स्थिति

इससे पहले कि मैं तीन केस स्टडी परिप्रेक्ष्यों की तुलना प्रस्तुत करूँ, मुझे लगता है कि पाठकों को शोधकर्ता के रूप में मेरी पहचान, इस विषय पर मेरा निवेश, और इस परियोजना में मेरे उद्देश्य मालूम होने चाहिए। मैंने हाल ही में व्यवहारिक भाषा विज्ञान के क्षेत्र में डॉक्टरेट की उपाधि शोध-निबन्ध के साथ पूर्ण की है जिसका मुख्य बिन्दु दूसरी भाषा के रूप में अँग्रेजी शिक्षक अभ्यर्थियों का वृत्तिक तत्समक विकास था। मैरीलैंड विश्वविद्यालय में एक डॉक्टरेट छात्र के रूप में, एक शोध प्रविधि की मेरी खोज ने मेरी रुचि को केस स्टडी की ओर विकसित किया, जो शैक्षिक शोध में सबसे अधिक विवादित प्रविधि है। जब मैं अपनी शोध-निबन्ध परियोजना को संकल्पित व डिज़ाइन कर रहा था तब मैं पुनरावर्ती प्रक्रिया में अपने शोध विषय को सीमित करने में, मेरे प्रश्नों को पैना करने, और शोध प्रविधि का सबसे उपयुक्त साधन को ढूँढ़ने में व्यस्त रहा। तब मैंने एक केस स्टडी पाठ्यक्रम के लिए अपना नाम दर्ज कराया, इससे मेरा परिचय यिन, मेरियम, और स्टेक की केस स्टडी प्रविधि की व्याख्या से हुआ। मुझे अपने शोध-निबन्ध के लिए न केवल केस स्टडी की क्रियात्मकता की जाँच का अवसर मिला बल्कि यह भी तय करने का भी मौका मिला कि केस स्टडी का कौन-सा दृष्टिकोण एक उभरते हुए शोधकर्ता के रूप में मेरे ज्ञानमीमांसीय उन्मुखीकरण के लिए सबसे उपयुक्त रहेगा। वर्तमान शोध पत्र इस निर्णय लेने की प्रक्रिया का उत्पाद है।

इस शोध पत्र में मेरा उद्देश्य उन उभरते शोधकर्ताओं के लिए केस स्टडी शोध के तीन मूलभूत पाठों का एक तुलनात्मक पूर्वावलोकन प्रदान करना है जो अभी अपनी पसन्द की प्रविधि के बारे में निर्णय लेने की प्रक्रिया में हैं। इस शोध पत्र के माध्यम से वे केस स्टडी के अलग-अलग दृष्टिकोणों से खुद को परिचित कर सकते हैं, जिससे वे अपनी शोध डिज़ाइन को अपनी ज्ञानमीमांसीय प्रवृत्ति से संगत कर सकते हैं और अपने शोध प्रश्नों का जवाब भी पर्याप्त दृढ़ता से दे सकते हैं। वे या तो एक प्रविधिकार द्वारा दिए गए साधन का उपयोग करने का विकल्प चुन सकते हैं या उनमें से दो या तीन साधनों का एक मिश्रण बना सकते हैं।

तुलनात्मक विश्लेषण की चुनौतियाँ

केस स्टडी प्रविधि के तीन परिप्रेक्ष्यों की तुलना को प्रस्तुत करने से पहले, मुझे इस तुलनात्मक कृति की रचना में संलग्न प्रमुख चुनौतियों का उल्लेख करना चाहिए। तीन लेखकों की मौलिक किताबों के विभिन्न उद्देश्यों का मैं इस शोध पत्र में विश्लेषण करने की कोशिश करूँगा। इस अन्तर ने मुझे आंशिक रूप से केस स्टडी प्रविधि के सभी पहलुओं में एक ही आधार पर तीनों केस स्टडी परिप्रेक्ष्यों की तुलना और विषमता करने से रोका है। उदाहरण के लिए, स्टेक (1995) की पुस्तक *द आर्ट ऑफ़ केस स्टडी रिसर्च* में, मुख्य सम्बोध्य वे छात्र हैं जो अपनी शोध परियोजनाओं में केस स्टडी को एक प्रविधि के रूप में नियोजित करने की योजना बना रहे हैं। उनकी पुस्तक का मुख्य उद्देश्य केस स्टडी के प्रति एक व्याख्यात्मक उन्मुखीकरण समूह का अन्वेषण है जिसमें "प्रकृतिवादी, पूर्णतावादी, नृवंशविज्ञानी, घटनात्मक, और जीवनी सम्बन्धी शोध प्रविधियाँ" शामिल हैं (स्टेक, 1995, पृष्ठ xi)। यिन, केस स्टडी की डिज़ाइन व प्रविधियों को प्रस्तुत करने पर लक्ष्य साधते दिखाई पड़ते हैं व इस बात की वकालत करते हैं कि सामाजिक विज्ञान में केस स्टडी किसी सैद्धान्तिक कथन की जाँच को संचालित करने की एक उचित प्रविधि है। वह निश्चयपूर्वक कहते हैं कि ऐसा प्रतीत होता है कि पहले किए गए सभी प्रयासों में केस स्टडी प्रविधि के प्रयोग में एक समग्र मार्गदर्शिका की कमी थी। इसलिए वह चाहते हैं कि उनके मूल पाठ द्वारा "सामाजिक विज्ञान प्रविधि में जो एक रिक्त स्थान है, जिसपर अब तक पाठ्य सामग्री का प्रभुत्व है... जो यह निर्देशित नहीं कर पा रही है कि कैसे केस स्टडी शुरू करें, आँकड़ों का विश्लेषण, और यहाँ तक कि केस स्टडी प्रतिवेदन की रचना में समस्याओं को कम कैसे करें", उसकी पूर्ति हो सके (यिन, 2002, पृष्ठ 3)। केस स्टडी के शोधकर्ताओं के लिए उपलब्ध संसाधनों की कमी को ध्यान में रखते हुए, यिन की तरह मेरियम का भी उद्देश्य था कि वह केस स्टडी साहित्य में योगदान प्रदान करें जो "अभी भी शोधों के अन्य प्रकार के साहित्य से पीछे है" (मेरियम, 1998, पृष्ठ 19)। मेरियम की पुस्तक प्रमुख रूप से गुणात्मक शोध के सामान्य सिद्धान्तों और उपयोग पर इस द्वितीयक जोर के साथ केन्द्रित

है कि गुणात्मक शोध प्रविधियों में से एक के रूप में केस स्टडी पर वे कैसे लागू किए जाते हैं। उनका उद्देश्य केस स्टडी में विद्यमान "धुँधले" क्षेत्रों को स्पष्ट करना है। उनकी किताब का उद्देश्य गुणात्मक शोध में केस स्टडी की उलझनों को दूर करना है और इसपर प्रकाश डालना है कि "केस स्टडी का गठन क्या है और वह दूसरी गुणात्मक शोध प्रविधियों से अलग कैसे है और यह कब उपयोग करने के लिए सबसे ज्यादा उपयुक्त है" (मेरियम, 1998, पृष्ठ 19)। ये असमानताएँ लेखकों की अलग-अलग अवधारणाओं के बारे में उन सवालों को समझा सकती हैं जो विश्लेषण के शेष भाग में उत्पन्न हो सकते हैं। आगे वाले भाग में एक दूसरी तरह की असमानता को प्रस्तुत किया जाएगा जिसके बारे में विश्लेषण में गहन शोध प्रारम्भ करने से पहले मैं चर्चा करूँगा।

विश्लेषण में जिस पद्धति को मैंने अपनाया उसको समझाने के लिए तीनों पुस्तकों की मेरी प्रारम्भिक छानबीन ने मुझे अपने तुलनात्मक और विषम विश्लेषण की प्रणाली के दौरान ध्यान केन्द्रित करने के लिए मानदण्ड का एक समूह चुनने के लिए प्रेरित किया। मानदण्ड के समूह में निम्नलिखित शामिल हैं : ज्ञानमीमांसीय प्रतिबद्धताएँ, केस और केस स्टडी को परिभाषित करना, केस स्टडी डिज़ाइन, आँकड़ों का संग्रहण, आँकड़ों का विश्लेषण और आँकड़ों का विधिमान्यकरण। मेरा दूसरा कदम यह था कि उन तीनों केस अध्ययनों के दृष्टिकोणों के बीच समानताओं और विभिन्नताओं के सन्दर्भ में मैंने जो कुछ भी पाया उसे एक चार्ट के रूप में बनाऊँ। मैंने प्रत्येक पुस्तक के सम्बन्धित खण्डों में जाकर यह समझा कि कैसे वह प्रत्येक कसौटी में भिन्न व समान हैं और उससे मैंने चार्ट का निर्माण किया। इस चार्ट को पूरा करने के बाद, मैं अपने विश्लेषण की वैधता को अधिक अनुभवी उन गुणात्मक शोधकर्ताओं के साथ जाँचना चाहता था, जिन्हें मैं आलोचक दोस्त कहता हूँ। मैंने केस स्टडी सेमिनार पाठ्यक्रम के, जिसमें मैंने अपना नाम दर्ज कराया था, तीन उच्च श्रेणी के डॉक्टरेट छात्रों और प्रोफ़ेसर के साथ एक-एक करके मुलाकात की। उनके साथ मेरी बातचीत ने चार्ट को अन्तिम रूप दिया जिसने वर्तमान शोध पत्र को निर्देशित किया।

ज्ञानमीमांसीय प्रतिबद्धताएँ

ज्ञान की प्रकृति व उत्पत्ति में शोधकर्ताओं के विचार, संक्षेप में उनके ज्ञानमीमांसीय झुकाव, यह सब उनके द्वारा अवधारित व संचालित जाँच परियोजना के आधार होते हैं। यह सम्पूर्ण शोध प्रक्रिया के हर चरण में व्याप्त होती है, जिसमें रुचि के विषय के चयन से लेकर अन्तिम प्रतिवेदन बनाने के तरीके की जाँच तक शामिल है। जैसा मेरियम कहती हैं, "शोध, आखिरकार, दुनिया के बारे में ज्ञान की उत्पत्ति करना है– हमारे केस में, शैक्षिक अभ्यास की दुनिया"

(मेरियम, 1998, पृष्ठ 3)। शोधकर्ताओं और शोध प्रविधिकारों के रूप में, यिन, मेरियम और स्टेक की उनकी खुद की ज्ञानात्मक प्रतिबद्धताएँ हैं जो केस स्टडी प्रविधि के उनके परिप्रेक्ष्यों को प्रभावित करती हैं और वे उभरते शोधकर्ताओं को अपने शोध प्रयासों में केस स्टडी प्रविधि के उपयोग में सिद्धान्तों और चरणों को मानने की सलाह देते हैं। ये प्रतिबद्धताएँ केस स्टडी शोध पर उनकी बुनियादी पुस्तकों में खुद को या तो स्पष्ट रूप से या अन्तर्निहित रूप से व्यक्त करती हैं और उन नजरियों को अवधारित करती हैं जहाँ से वे केस स्टडी के बारे में कल्पना करते हैं। इसलिए, मेरे विश्लेषण से पहले, मैं यिन, मेरियम और स्टेक के खास ज्ञानमीमांसीय उन्मुखीकरण का लाभ उठाऊँगा, जो आगामी विश्लेषण के बारे में पूर्व सूचना देगा।

यिन अपने केस स्टडी के परिप्रेक्ष्य में प्रत्यक्षवादी रुझानों का प्रदर्शन करते हैं। क्रॉटी (Crotty) (1998) ने सुझाया कि शोध में प्रत्यक्षवादी उन्मुखीकरण में तीन विचार मौलिक हैं : वस्तुनिष्ठता, वैधता और सामान्यीकरण (generalizability)। अगर शोधकर्ता यह दावा करते हैं कि उनके प्रस्तावित अध्ययन के निष्कर्षों से यह फायदा होगा कि "स्थापित तथ्यों को प्राप्त करेंगे या कम-से-कम स्थापित तथ्य के करीब जाएँगे, जैसे (उनके) शोध ने (उनको) पहुँचाने के योग्य बनाया है," तो क्रॉटी (1998) के दृष्टिकोण से इसका अर्थ यह हुआ कि जो दार्शनिक परम्परा उनके शोध को मजबूत बना रही है वह प्रत्यक्षवाद है (पृष्ठ 41)। यिन ने स्पष्ट रूप से अपने ज्ञानमीमांसीय उन्मुखीकरण को अपनी पुस्तक में व्यक्त नहीं किया है, पर जिस तरह से वह केस स्टडी या शोध की तरफ सामान्य रूप से बढ़ते हैं और वे पहलू जिनपर वह सबसे ज्यादा जोर देते हैं, उनसे यह संकेत मिलता है कि उनका दार्शनिक रवैया प्रत्यक्षवादी परम्परा की ओर है। उदाहरण के लिए, एक यिनियन दृष्टिकोण के अनुसार, केस स्टडी शोधकर्ता को "डिज़ाइन गुणवत्ता से सम्बन्धित चार स्थितियों को अधिकतम सीमा तक बढ़ाना चाहिए : निर्माण वैधता, आन्तरिक वैधता, बाह्य वैधता, और विश्वसनीयता। गुणवत्ता नियंत्रण के इन पहलुओं से शोधकर्ता कैसे पेश आते हैं" (यिन, 2002, पृष्ठ 19) यह केस स्टडी शोध के हर चरण में अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। अपने मूल पाठ में, यिन बार-बार यह सुझाते हैं कि उभरते शोधकर्ताओं को अपनी जाँच प्रक्रिया की प्रत्येक अवस्था में इन चार "मापदण्डों" को अपने ध्यान में रखना चाहिए ताकि उनके शोध में गुणवत्ता सुनिश्चित हो सके। इस प्रकार, क्रॉटी की समझ से, प्रत्यक्षवाद उन्मुखीकरण केस स्टडी शोध पर यिनियन परिप्रेक्ष्य को रेखांकित करता है। इसके अलावा, मात्रात्मक और गुणात्मक शोध परम्पराओं के बीच द्विभाजन पर यिन का दृष्टिकोण यह संकेत दे सकता है कि वह क्यों अपने दार्शनिक उन्मुखीकरण का कुछ हद तक खुले तौर पर जिक्र नहीं करेंगे। वह उन लोगों के विरुद्ध तर्क देते हैं जो बेमेल दार्शनिक अन्तरों की वजह से मात्रात्मक और गुणात्मक उन्मुखीकरण के बीच विभेद उत्पन्न करते हैं : "इसके बावजूद, कि कोई व्यक्ति गुणात्मक या मात्रात्मक शोध का पक्ष ले, दोनों में ही एक मजबूत और अति

आवश्यक सामान्य आधार है" (यिन, 2002, पृष्ठ 15)। वह दो शोध परम्पराओं की समानताओं पर ध्यान देते हैं और व्यवहारिक रूप से समान साधनों को सामने लाते हैं जो कि उनके द्वारा सुझाई गई केस स्टडी की डिज़ाइन और विधियों में कार्यात्मक और मददगार हो सकते हैं, इसलिए वह मात्रात्मक और गुणात्मक केस स्टडी विधियों के बीच अन्तर नहीं करते हैं।

यिन के विपरीत, जो अपनी ज्ञानात्मक प्रतिबद्धताओं या उनकी पसन्द की उस ज्ञानमीमांसा, जिसे केस स्टडी प्रविधि की अगुवाई करनी चाहिए, के बारे में कथन करने से बचते लगते हैं, स्टेक अपनी पुस्तक के एक अध्याय के एक बड़े भाग को ज्ञानमीमांसीय परम्परा की व्याख्या के लिए निर्धारित करते हैं और वे गुणात्मक केस स्टडी शोधकर्ताओं को उसपर अडिग रहने की भी सलाह देते हैं। इसके लिए उनका दावा है कि "केस स्टडी शोधकर्ताओं को पाठक के अनुभव में कैसे योगदान करना चाहिए, यह उनके ज्ञान और वास्तविकता के विचारों पर निर्भर करता है" (स्टेक, 1995, पृष्ठ 100)। एक स्टेकियन दृष्टिकोण से, रचनात्मकतावाद और अस्तित्ववाद (गैर-नियतत्त्ववाद) ज्ञानमीमांसा से जुड़े होने चाहिए जो गुणात्मक केस स्टडी शोध को उन्मुख व सूचित करे क्योंकि "अधिकांश समकालीन गुणात्मक शोधकर्ता यह विचार रखते हैं कि ज्ञान निर्मित होता है न कि आविष्कृत" (स्टेक, 1995, पृष्ठ 99)। इसलिए वह मुख्य रूप से गुणात्मक केस स्टडी शोधकर्ताओं की व्याख्याकारों, और व्याख्याओं के संग्रहकर्ताओं के रूप में कल्पना करते हैं जो उन्हें उनके अनुसन्धान के दौरान इकट्ठी की गई संरचित वास्तविकता या ज्ञान के प्रस्तुतीकरण या संरचना को सूचित करने की जरूरत प्रदान करती हैं। स्टेकियन परिप्रेक्ष्य में, गुणात्मक शोधकर्ताओं को उपरोक्त दो स्तरों के अलावा, उनके प्रतिवेदन के पाठकों के लिए उनकी वास्तविकता या ज्ञान के निर्माण के एक और स्तर की उम्मीद करनी चाहिए। यह निष्कर्ष उनके तर्क के अनुसार भी संगत है कि "केस के कई परिप्रेक्ष्य या विचार हैं जिनको उजागर करने की आवश्यकता है, लेकिन, बिना विवाद के, सर्वश्रेष्ठ विचार को स्थापित करने का और कोई तरीका नहीं है। (स्टेक, 1995, पृष्ठ 108)।

अपने ज्ञानमीमांसीय रुख के सन्दर्भ में, मेरियम, यिन के दृष्टिकोण की तुलना में स्टेक के दृष्टिकोण के बहुत करीब लगती हैं। उनके परिप्रेक्ष्य के अनुसार, गुणात्मक केस स्टडी को रचनात्मकतावाद की तरफ उन्मुख होना चाहिए चूँकि वह इसपर कायम हैं कि "मुख्य दार्शनिक अवधारणा जिसपर सभी प्रकार के गुणात्मक शोध निर्भर करते हैं वह इस विचार पर आधारित है कि वास्तविकता का निर्माण उन व्यक्तियों द्वारा अपने सामाजिक जगत के साथ अन्तर्क्रिया करने से होता है (मेरियम, 1998, पृष्ठ 6)। उसी अन्दाज में, वह टिप्पणी करती हैं "कि वास्तविकता एक वस्तुनिष्ठ वस्तु नहीं है; बल्कि, वास्तविकता की बहुत सारी व्याख्याएँ हैं" (मेरियम, 1998, पृष्ठ 22)। इसलिए, इस दार्शनिक अवधारणा को अपनाने के लिए, गुणात्मक

शोधकर्ताओं की प्राथमिक रुचि व्यक्ति द्वारा निर्मित अर्थ या ज्ञान को समझना है। दूसरे शब्दों में, वास्तव में गुणात्मक शोधकर्ताओं को क्या जिज्ञासु बनाता है यह इस बात से पता चलता है कि किस तरह से लोग अपनी दुनिया और दुनिया से मिले अपने अनुभवों को महसूस करते हैं। इसके अलावा, शोध प्रक्रिया में अर्थ निर्माण की मेरियम की अवधारणा स्टेक की बहुस्तरीय वास्तविकता या ज्ञान निर्माण की तरफ झुकी हुई है, लेकिन मेरियम अपने पाठकों से उम्मीद नहीं करतीं कि वो इस निर्माण या व्याख्या में शामिल हों। वह व्याख्या या अर्थ निर्माण को दो पंक्तियों में स्पष्ट करती हैं कि अन्तिम प्रतिवेदन में वास्तविकता सामने आई है :

> शोधकर्ता शोध की दशा में वास्तविकता की स्थिति का निर्माण करता है, जो अध्ययन किए जा रहे प्रसंग पर दूसरे व्यक्ति की रचनाओं या व्याख्याओं से अन्तर्क्रिया करता है। इस तरह के अध्ययन का अन्तिम परिणाम दूसरों के विचारों का शोधकर्ता द्वारा अपने दृष्टिकोण से साफ की हुई एक और व्याख्या है। (मेरियम, 1998, पृष्ठ 22)

तीनों केस स्टडी प्रविधिकारों की तीन पुस्तकों में व्याप्त अलग-अलग ज्ञानमीमांसीय प्रतिबद्धताओं पर चर्चा करने के बाद मुझे लगता है इस खण्ड की चर्चा को, मेरे ज्ञानमीमांसीय रुख के एक संक्षिप्त विवरण व किस तरह से यह यिन, मेरियम और स्टेक की केस स्टडी व्याख्याओं पर मेरी पहुँच को प्रभावित करती है, के साथ विराम देना चाहिए। एक उभरते हुए शैक्षिक शोधकर्ता के रूप में, ज्ञानमीमांसीय रूप से मैं अपने आपको रचनात्मकतावादी प्रतिमान से अधिक निकटता से जुड़ा हुआ पाता हूँ। मैं विचार करता हूँ कि ज्ञान समाज द्वारा निर्मित है व व्यक्तियों के सामाजिक प्रयासों से उत्पन्न होता है; इसलिए, मैं यह अवधारणा रखता हूँ कि सामाजिक वास्तविकता व्यक्ति द्वारा उत्पन्न व निर्मित होती है और व्यक्ति के मस्तिष्क में व्यापक रूप से मौजूद होती है। मेरा मानना है कि शोध के प्रयास “सामाजिक जीवन संसार की सांस्कृतिक रूप से व्युत्पन्न और ऐतिहासिक रूप से स्थित व्याख्याओं को” ढूँढ़ने की ओर अग्रसर हो रहे हैं (क्रॉटी, 1998, पृष्ठ 67)। इस दार्शनिक रुख के कारण, मैं खुद को यिन के साथ ज्ञानमीमांसीय रूप से असन्तुष्ट और मेरियम व स्टेक के साथ बहुत अधिक अनुकूल पाता हूँ। हालाँकि, चूँकि मेरा उन्मुखीकरण ड्वियन व्यवहारिकतावाद (Deweyan pragmatism) से ज्यादा मेल खाता है, वर्तमान विश्लेषण यिन द्वारा सुझाई गई रणनीतियों, दिशा निर्देशों, और उपकरणों के समूह के साधनों को सम्मिलित करता है। अर्थात मेरे रचनावादी झुकावों ने मुझे केवल स्टेक और मेरियम के प्रतिपादनों का पालन करने के लिए प्रेरित नहीं किया है। इसके विपरीत, मैंने तीनों लेखकों की पुस्तकों को ध्यान में रखते हुए संकल्पना करने, डिज़ाइन करने, और “अनुशासित जाँच” का संचालन करने में उनके योगदानों का विश्लेषण और संश्लेषण करने का प्रयास किया। (शुलमैन [Shulman], 1988)

केस व केस स्टडी को परिभाषित करना

केस स्टडी प्रविधि पर उनकी पुस्तकों में, तीनों लेखक केस व केस स्टडी की परिभाषा में भिन्न मत रखते हैं। उदाहरण के लिए, यिन (2002) ने केस को इस प्रकार परिभाषित किया "अपने यथार्थ जीवन सन्दर्भ में एक समकालीन घटनाक्रम, खासकर जब एक घटनाक्रम और सन्दर्भ के बीच की सीमाएँ स्पष्ट नहीं होती हैं और शोधकर्ता का घटना और सन्दर्भ पर बहुत कम नियंत्रण होता है" (पृष्ठ 13)। केस की उनकी परिभाषा भी केस स्टडी को शोध की एक विधि सम्मत प्रविधि के रूप में उनके पक्षसमर्थन को दर्शाती है। परिभाषा में यह धारणा अन्तर्निहित है कि इतिहास, प्रयोग और सर्वेक्षण जैसी दूसरी शोध रणनीतियाँ केस की पड़ताल करने में सक्षम नहीं हैं जो शोधकर्ताओं में रुचि उत्पन्न करें। इसलिए उन्हें पूर्ण रूप से एक नई केस स्टडी नामक "व्यापक शोध रणनीति" की आवश्यकता है (यिन, 2002, पृष्ठ 14)। इस परिभाषा के अनुसार, यिनियन दृष्टिकोण से, केस स्टडी एक अनुभवजन्य तहकीकात है जो केस या केसों के बारे में जाँच उपरोक्त परिभाषा के अनुरूप रुचि के विषय से सम्बन्धित "कैसे" या "क्यों" प्रश्नों को पूछकर करती है। वह इसे योजना मूल्यांकन के लिए विशेष रूप से साधन के रूप में पाते हैं। उनकी तकनीकी परिभाषा का बाकी हिस्सा अध्ययन के अधीन आँकड़ों के संग्रहण व विश्लेषण के पहलुओं पर ध्यान आकर्षित करता है : किसी खास स्थिति की जाँच करने के लिए "जिसमें समंक बिन्दुओं (data points) के अलावा रुचि के कई और चर शामिल हों", केस स्टडी त्रिकोणीकरण उद्देश्यों के लिए साक्ष्य की विविध पद्धतियों का वर्णन करता है और "आँकड़ों के संकलन और विश्लेषण के मार्गदर्शन के लिए सैद्धान्तिक प्रस्थापनाओं के पूर्वगामी विकास" का लाभ उठाता है (यिन, 2002, पृष्ठ 13-14)। यह सावधानी इस बात की सूचक है कि एक शोध रणनीति के रूप में केस स्टडी के डिज़ाइन घटकों और अवस्थाओं के बीच सामंजस्य और स्थिरता के सन्दर्भ में उनका दृष्टिकोण कितना सुगढ़ है। उसके रुख के अनुसार, शोध प्रक्रिया में हर कदम पर या निर्णय लेते समय, शोधकर्ताओं को सैद्धान्तिक प्रस्थापनाओं और मामले की विशेषताओं के अनुरूप तर्क प्रदान करने में सक्षम होना चाहिए।

केस स्टडी के स्टेकियन दृष्टिकोण से, केसों या केस अध्ययनों की एक सटीक परिभाषा सम्भव नहीं है क्योंकि यह बहुत सम्भव है कि वह केस या अध्ययनों की जिस सटीक परिभाषा को सामने रखेंगे वो दूसरे विषयों के केस स्टडी उपयोगकर्ताओं द्वारा दी गई परिभाषाओं से मेल नहीं खाएगी। जहाँ तक केस की परिभाषा का प्रसंग है, स्टेक (1995) लुइस स्मिथ (Louis Smith) (1978) की व्याख्या से सहमति रखते हैं : शोधकर्ताओं को केस को "एक परिबद्ध प्रणाली" के रूप में देखना चाहिए और उसकी "एक वस्तु के रूप में न कि एक प्रक्रिया के रूप में" पड़ताल करनी चाहिए (पृष्ठ 2)। वह खुद केस के कुछ गुणों को अपनी संकल्पनाओं में

दर्शाते हैं : केस "एक विशिष्ट, जटिल, कार्यात्मक वस्तु" है, विशेष रूप से "एक एकीकृत प्रणाली" है, जिसमें "एक सीमा, और क्रियाशील भाग" और उद्देश्य होते हैं (सामाजिक विज्ञान और मानव सेवाओं में) (पृष्ठ 2)। तदनुरूप, इस परिभाषा को देखते हुए, वह ध्यान देते हैं कि उनकी पुस्तक में वर्णित विधियाँ, कार्यक्रमों व व्यक्तियों के अध्ययन के लिए ज्यादा फायदेमन्द होंगी और घटनाओं और प्रक्रियाओं के अध्ययन के लिए कम फायदेमन्द होंगी। स्टेक का यह विचार यिन के साथ आंशिक रूप से मेल खाता है जिनका मानना था कि योजना मूल्यांकन के लिए केस स्टडी विधियाँ श्रेष्ठ होती हैं। इसके अतिरिक्त, स्टेक गुणात्मक शोध की चार परिभाषित विशेषताओं का उल्लेख करते हैं जो कि गुणात्मक केस स्टडी के लिए भी वैध हैं : वह हैं "समग्रात्मक", "आनुभविक", "व्याख्यात्मक" और "प्रभावी"। समग्रात्मक का अर्थ है कि शोधकर्ताओं को घटना और उसके सन्दर्भों के बीच परस्पर सम्बन्ध पर ध्यान देना चाहिए जो कि अभिन्न कड़ी की तरह समान है जिसे केस को परिभाषित करते हुए यिन ने इंगित किया था। आनुभविक का मतलब यह है कि शोधकर्ता अध्ययन को खुद के अवलोकनों पर आधारित करते हैं। व्याख्यात्मक का अर्थ है कि शोधकर्ता अपने अन्तर्ज्ञान पर निर्भर होते हैं और शोध को मुख्यतः शोधकर्ता और विषय की एक अन्तर्क्रिया के रूप में देखते हैं, जो कि ज्ञानमीमांसीय रचनावाद के साथ अनुकूल है। आखिर में, प्रभावी का अर्थ है कि शोधकर्ताओं को एक व्यवस्थापरक परिप्रेक्ष्य में विषयों के प्रतिस्थानिक अनुभवों को प्रतिबिम्बित करना है।

मेरियम (1998) के लिए, केस का सीमांकन ही केस स्टडी शोध की पारिभाषिक विशेषता है। उनके द्वारा दी गई परिभाषा स्मिथ (1978) के केस को एक परिबद्ध प्रणाली के रूप में देखने के विचार से व स्टेक के केस को एक एकीकृत प्रणाली के रूप में देखने के विचार से मेल खाती है। वह "केस को एक वस्तु, एक अकेला अस्तित्व, एक ऐसी इकाई जिसके आसपास सीमाएँ हों" के रूप में देखती हैं (पृष्ठ 27)। तो, केस एक वस्तु, एक योजना, एक समूह, एक विशिष्ट नीति इत्यादि हो सकता है, जो यिन और स्टेक की सूचियों की अपेक्षा एक बहुत सारी व्यापक सूची को प्रस्तुत करता है। मेरियम की दृष्टि माइल्स और हुबरमेन (Miles and Huberman, 1994) की समझ से प्रभावित है जिनका मानना है कि "केस किसी प्रकार का एक घटनाक्रम है जो परिबद्ध सन्दर्भ में घटता है" (मेरियम, 1998, पृष्ठ 27 में उल्लेखित), जब तक शोधकर्ता रुचि के घटनाक्रम का विस्तृत विवरण और वह क्या जाँच करने वाले हैं उसकी सीमाएँ खींचने या "घेराव करने" के योग्य हैं, उसे वे केस का नाम दे सकते हैं। संक्षेप में, जो परिभाषा वह प्रस्तुत करती हैं, वह यिन और स्टेक की परिभाषाओं की तुलना में व्यापक है और शोध में गुणात्मक केस स्टडी रणनीति के उपयोग में केसों की एक अधिक विस्तृत शृंखला में लचीलापन उपलब्ध कराती है। केस स्टडी शोध की परिभाषा के लिए, मेरियम गुणात्मक केस स्टडी के लिए यह विचार रखती हैं कि केस स्टडी "एक गहन, समग्र वर्णन है और किसी परिबद्ध घटनाक्रम जैसे

एक योजना, एक संस्था, एक व्यक्ति, एक प्रक्रिया, या एक सामाजिक इकाई का विश्लेषण है" (पृष्ठ 13)। केस स्टडी विधि को केसवर्क, केस प्रविधि, केस इतिहास (केस अभिलेख) से पृथक् करने के उद्देश्य से, वह उसके विशिष्ट गुणों पर बल देती है : विशिष्टतावादी (यह विशेष स्थिति, घटना, योजना, या घटनाक्रम पर केन्द्रित है); वर्णनात्मक (यह अध्ययन के तहत घटना का एक समृद्ध, प्रचुर विवरण देता है); अन्वेषणात्मक (यह अध्ययन के तहत घटना की पाठक की समझ को स्पष्ट करता है)। जैसे यिन ने केस स्टडी का एक विधि सम्मत शोध रणनीति के रूप में समर्थन किया, मेरियम भी यह जिम्मेदारी सँभालती दिखीं कि वह केस स्टडी को एक सुपरिभाषित और सुसंरचित शोध प्रविधि बनाने में मदद कर सकें चूँकि उन्होंने उसकी सर्वोत्कृष्ट और विशेष प्रकृति की विशेषताओं पर रोशनी डाली जिससे नए शोधकर्ता उसे दूसरी गुणात्मक शोध प्रविधियों से अलग करके उसका एक नई शोध रणनीति के रूप में उपयोग कर सकें।

केस स्टडी की डिज़ाइन बनाना

यिन केस स्टडी की डिज़ाइन पर बहुत जोर डालते हैं जैसा कि उनकी पुस्तक का उपशीर्षक भी यह प्रस्तावित करता है। जैसा कि मैंने उनकी पुस्तक के उद्देश्य का वर्णन करते हुए उल्लेख किया है, उन्होंने अवलोकन किया कि केस स्टडी में अन्य शोध रणनीतियों की तरह एक "संहिताबद्ध डिज़ाइन" नहीं है, जो कि सामाजिक वैज्ञानिक काम में लेते हैं, यही वजह है कि कुछ जाँचकर्ता इसे एक उल्लेखनीय शोध प्रविधि की तरह महत्त्व प्रदान नहीं करते हैं। दूसरे शब्दों में, वह यह निष्कर्ष निकालते हैं कि "अन्य शोध रणनीतियों के विपरीत, केस स्टडी के लिए शोध डिज़ाइनों का एक व्यापक 'सूचीपत्र' अभी तक विकसित नहीं हुआ है" (यिन, 2002, पृष्ठ 19) और वह स्पष्ट रूप से खुद को इस विकास के लिए प्रतिबद्ध करते हैं। इसलिए, वह निश्चित रूप से विस्तृत और व्यापक दृष्टिकोण की डिज़ाइन प्रस्तुत करते हैं, जिसमें शोध प्रक्रिया के हर कदम पर, शोध प्रश्नों के निर्माण से पूर्वगामी सैद्धान्तिक प्रस्थापनाओं को ध्यान में रखते हुए आँकड़ों के संग्रहण और विश्लेषण तथा पूरे शोध के प्रतिवेदन तैयार होने तक पूरे शोध को बहुत ही सावधानीपूर्वक करते हैं।

डिज़ाइन को अनिवार्य रूप से "एक तार्किक अनुक्रम के रूप में परिभाषित कर जो आनुभविक आँकड़ों को किसी शोध के प्रारम्भिक शोध प्रश्नों से और अन्ततः उसके निष्कर्षों से जोड़ कर रखता है," (पृष्ठ 20) यिन (2002) ने चार प्रकार के डिज़ाइन सुझाए हैं जिनका केस स्टडी शोधकर्ता अपने शोध में उपयोग कर सकते हैं। ये चार प्रकार हैं– एकल समग्रात्मक डिज़ाइन (single holistic design), एकल सन्निहित डिज़ाइन (single embedded design), बहु समग्रात्मक डिज़ाइन (multiple holistic design) और बहु सन्निहित डिज़ाइन (multiple

embedded design)। समग्रात्मक डिज़ाइनों में एक इकाई के विश्लेषण की आवश्यकता होती है, जबकि सन्निहित डिज़ाइनों में कई बहु इकाइयों के विश्लेषण की आवश्यकता होती है। यिन, प्रशिक्षु शोधकर्ताओं को सलाह देते हैं कि वे उस डिज़ाइन का चयन करें जो उन्हें अपने शोध सवालों के जवाब देने के लिए ज्यादा-से-ज्यादा साधन प्रदान करे, और हर डिज़ाइन के गुणों व सीमाओं पर विचार करें और उनमें से प्रत्येक का क्रियान्वयन करते समय कोई भी भूल से बचें।

यिन के परिप्रेक्ष्य से, केस स्टडी शोध डिज़ाइन में पाँच घटक सम्मिलित हैं : एक अध्ययन के प्रश्न; उसकी प्रस्थापनाएँ, अगर कोई हों तो; उसके विश्लेषण की इकाई (इकाइयाँ); प्रस्थापनाओं को आँकड़ों से जोड़ने वाला तर्क; और निष्कर्षों की व्याख्या करने के लिए मानदण्ड। पूछताछ की रूपरेखा तैयार करते समय, शोधकर्ता यह सुनिश्चित करे कि ये घटक एक दूसरे के साथ संसक्त और समनुरूप हैं। यिन चौथे और पाँचवें घटकों पर अधिक ध्यान केन्द्रित करते हैं जो केस स्टडी विधि में आँकड़ों के विश्लेषण के चरणों की योजना को सन्दर्भित करते हैं। वह यह भी सलाह देते हैं कि केस स्टडी शोधकर्ताओं को इन “कम-से-कम सुविकसित घटकों” की योजना बहुत ही कर्तव्यनिष्ठता और कठोरता से बनानी चाहिए ताकि उनकी जाँच में विश्लेषणात्मक संक्रियाओं के लिए एक ठोस आधार हो (यिन, 2002, पृष्ठ 26)। इन घटकों के सम्बन्ध में यिन इस बात की आवश्यकता पर जोर देते हैं कि शोधकर्ताओं को कोई आँकड़ों के संग्रहण का संचालन शुरू करने से पहले प्रासंगिक साहित्य की समीक्षा और अध्ययन के तहत केस से सम्बन्धित सैद्धान्तिक प्रस्थापनाओं का ध्यान रखना चाहिए जो इस तरह से इसे मूल सिद्धान्त और नृवंशविज्ञान से अलग करता है। यिन के केस स्टडी के डिज़ाइन के प्रतिपादन के बारे में एक अन्य बिन्दु के रूप में, वे चार मानदण्डों के विरुद्ध डिज़ाइन की गुणवत्ता को मापने का सुझाव देते हैं जिसमें संरचित वैधता, आन्तरिक वैधता, बाहरी वैधता और विश्वसनीयता शामिल हैं। जाँच प्रक्रिया के हर चरण में इन स्थितियों का महत्तम मूल्यांकन उन शोधकर्ताओं पर निर्भर है जो कठोर और मजबूत केस स्टडी डिज़ाइन विकसित करना चाहते हैं। अन्त में, यिन शोध के आरम्भ में एक विस्तृत डिज़ाइन तैयार करने पर काफी जोर देते हैं और यह सुझाव देते हैं कि जाँचकर्ता आँकड़ा संग्रहण शुरू करने के बाद इस डिज़ाइन में मामूली बदलाव कर सकते हैं। हालाँकि, अगर उन्हें बड़ा फेरबदल करने की जरूरत लगे तो यिन के परिप्रेक्ष्य से शोधकर्ताओं को वापस संकल्पना के पहले चरण पर जाना चाहिए और डिज़ाइन का अध्ययन करना वापस शुरू करना चाहिए।

यिन के विपरीत, जिन्होंने केस स्टडी प्रविधि के एक बहुत सख्त व संरचित डिज़ाइन को सुझाया है, स्टेक ने एक लचीले डिज़ाइन का तर्क दिया है जिसमें वे शोधकर्ताओं को बड़े बदलाव की अनुमति देते हैं चाहे भले ही वे डिज़ाइन से शोध तक आगे बढ़ गए हों। एकमात्र प्रारम्भिक डिज़ाइन जिसका वे सुझाव देते हैं वह मुद्दों पर ध्यान देने और मुद्दे के प्रश्नों से सम्बन्धित है,

जो शोध प्रश्नों को डिज़ाइन करने में परिणत हो जाएगी। एक स्टेकियन दृष्टिकोण से, जाँचकर्ता "जटिलता और प्रासंगिकता पर ध्यान देने के लिए वैचारिक संरचना के रूप में मुद्दों का उपयोग करते हैं [और]... क्योंकि मुद्दे हमें अवलोकन की तरफ लेकर जाते हैं, यहाँ तक कि उन्हें छेड़ना, केस की समस्याएँ, परस्पर विरोधी प्रवाह, मानव चिन्ता की जटिल पृष्ठभूमियाँ हैं" (पृष्ठ 16-17)। स्टेक दो प्रकार के केस अध्ययनों की शुरुआत के बारे में महत्त्वपूर्ण सलाह देते हैं : "अन्तर्भूत केस स्टडी के लिए, केस प्रधान है; केस सर्वोच्च महत्त्व का है। सहायक केस स्टडी के लिए, मुद्दा प्रधान है; हम प्रधान मुद्दों के साथ शुरुआत और अन्त करते हैं" (स्टेक, 1995, पृष्ठ 16)।

यद्यपि स्टेक (1995) शोध प्रक्रिया के दौरान आँकड़ों के संग्रहण और विश्लेषण को शुरू करने के लिए कोई विशिष्ट बिन्दु नहीं सुझाते हैं, शोध प्रश्नों के बारे में उनकी सलाह यह संकेत देती है कि केस स्टडी शोधकर्ताओं को दो या तीन तीक्ष्ण अथवा विकसित मुद्दे के प्रश्नों (शोध प्रश्नों) के एक समूह की जरूरत होगी जो कि "अवलोकन, साक्षात्कार और दस्तावेज समीक्षा की संरचना में मदद करेगा" (पृष्ठ 20)। शोधकर्ताओं के "केस के साथ प्रारम्भिक सम्पर्कों से या अनुभवों से या संगत साहित्य" के द्वारा 10 या 20 मौलिक प्रश्नों को काटछाँट कर 2 या 3 किया जाता है। केस स्टडी डिज़ाइन के सन्दर्भ में स्टेक का स्पष्ट लचीलापन "प्रगतिशील ध्यान केन्द्रित करने" की धारणा को अपनाने से उपजा है, जो पर्लेट और हैमिल्टन (Parlett and Hamilton, 1972) ने पहली बार सामने रखा। यह धारणा इस मान्यता का निर्माण करती है कि "अध्ययन का पाठ्यक्रम पहले से तय नहीं किया जा सकता है" (स्टेक, 1998, पृष्ठ 22 में उद्धृत), जिसका यिन निश्चित रूप से विरोध करते हैं। पर्लेट और हैमिल्टन टिप्पणी करते हैं कि "जब जाँच आगे बढ़ती है और जैसे-जैसे चरण-दर-चरण संक्रमण होता है वैसे-वैसे समस्या क्षेत्र उत्तरोत्तर स्पष्ट और पुनर्परिभाषित होते जाते हैं" (स्टेक, 1998, पृष्ठ 22 में उद्धृत)। जब नए जाँचकर्ता स्टेक के लचीले दृष्टिकोण के बारे में सीखते हैं तो उन्हें वो अनुकूल लग सकता है क्योंकि इसमें यिन के दृष्टिकोण के अनुरूप डिज़ाइन की तैयारी की अधिक आवश्यकता नहीं होती है। हालाँकि, अगर वे एक विस्तृत कार्य योजना और समय-सीमा के बिना अपनी प्रारम्भिक शोध यात्रा निर्धारित करते हैं, तो वे प्रक्रिया के दौरान वे उसे गँवा सकते हैं या किसी बिन्दु पर अटक सकते हैं। यहाँ तक कि कुशल शोधकर्ताओं को अपनी जाँच शुरू करने से पहले एक बहुत अच्छी तरह से तैयार की गई डिज़ाइन की आवश्यकता हो सकती है। गुणात्मक शोध के एक वकील के रूप में स्टेक की सलाह, उभरते हुए शोधकर्ताओं को अनिश्चितता और अस्पष्टता की तरफ लेकर जाएगी क्योंकि इसमें स्पष्ट दिशा निर्देश गायब हैं।

मेरियम (1998) की पुस्तक में “डिज़ाइनिंग द स्टडी एंड सेलेक्टिंग ए सैम्पल” नामक एक अध्याय है, जो न केवल स्टेक के द्वारा प्रतिपादित गुणात्मक केस स्टडी बल्कि यिन की सुसंरचित केस स्टडी डिज़ाइन का भी पूरक है। शोध को निर्देशित करने के लिए जिस सैद्धान्तिक ढाँचे की रचना करना है उसके लिए वह संगत साहित्य की समीक्षा के लिए बहुत ही सटीक सूचना और स्पष्ट दिशा निर्देश एवं सलाह प्रदर्शित करती हैं। न तो यिन और न ही स्टेक के केस स्टडी डिज़ाइन में ऐसे दिशा निर्देश और सलाह शामिल हैं। नए केस स्टडी शोधकर्ताओं को अपनी शोध परियोजनाओं के लिए या अन्ततः उनके शोध प्रबन्ध के लिए साहित्य समीक्षा लिखने की आवश्यकता होती ही है। यह समीक्षा उन्हें अपनी जाँच की अवधारणा बनाने में और एक सैद्धान्तिक ढाँचा तैयार करने में मदद करती है, जिसपर वे अपनी सम्पूर्ण शोध प्रक्रिया का निर्माण कर सकते हैं। वे एक साहित्य समीक्षा को ठीक ढंग से करने के लिए आवश्यक निर्देशों को जानने के लिए मेरियम की पुस्तक देख सकते हैं जो उनके सैद्धान्तिक ढाँचे को प्रेरित करेगा।

मेरियम (1998) गुणात्मक शोध की डिज़ाइन की प्रक्रिया को एक अधिक विस्तृत रूप में चरणबद्ध रूप से प्रस्तुत करती हैं। उनकी चर्चा में साहित्यिक समीक्षा का आयोजन, एक सैद्धान्तिक ढाँचे का निर्माण, किसी शोध समस्या की पहचान, शोध प्रश्नों को तैयार व तीक्ष्ण करना और प्रतिदर्श (उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन) का चयन करना शामिल हैं। केस स्टडी डिज़ाइन में मेरियम का दृष्टिकोण न तो यिन के करीब है न ही स्टेक के; यह दोनों दृष्टिकोणों का एक संयोजन है। वह जिस डिज़ाइन की सिफारिश करती हैं, वो कुछ हद तक लचीली है और उसपर एक गुणात्मक परम्परा से आने वाला उनका प्रभाव है, लेकिन यह स्टेक के वर्णन जितनी लचीली नहीं है। उदाहरण के लिए, मेरियम (1998) सुझाती हैं कि “सोद्देश्य या उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन आमतौर पर आँकड़े एकत्र करने से पहले होता है, जबकि सैद्धान्तिक प्रतिदर्शन आँकड़ों के संग्रहण के साथ मिलकर किया जाता है” (पृष्ठ 66)। यिन के परिप्रेक्ष्य से यह सुझाव स्वीकार्य नहीं है क्योंकि वह यह सुनिश्चित करते हैं कि केस स्टडी डिज़ाइन आँकड़ों के संग्रहण से पहले होना चाहिए। स्टेक गुणात्मक केस स्टडी शोध के लिए किन्हीं भी प्रतिदर्शन रणनीतियों या प्रक्रियाओं का उल्लेख नहीं करते हैं; इसके बजाय, वह आँकड़ा संग्रहण शुरू करने के एक सटीक बिन्दु को निर्धारित करने से बचते हैं, जिसे वह गुणात्मक परम्परा की एक विशेषता के रूप में मानते हैं।

आँकड़ों का संग्रहण

तीनों शोधार्थी यह तर्क देते हैं कि केस स्टडी शोधकर्ताओं के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने आँकड़ों को कई स्रोतों से लें ताकि केस स्टडी अपनी जटिलता और सम्पूर्णता को बनाए रखे। आँकड़ों को इकट्ठा करने के साधनों के रूप में, ज्ञानमीमांसीय परम्परा जिससे कि वे अभिदत्त हैं, उन्हें उनके चयन को और आँकड़ा संग्रहण की सम्पूर्ण प्रक्रिया को वे कैसे समझते हैं, उसके लिए प्रेरित करता है। यिन मात्रात्मक और गुणात्मक साक्ष्यात्मक स्रोतों के संयोजन की वकालत करते हैं क्योंकि वह उन्हें समान रूप से मददगार मानते हैं, जबकि स्टेक और मेरियम गुणात्मक आँकड़ों के अनन्य उपयोग का सुझाव देते हैं।

उन प्रक्रियाओं का वर्णन करने के बाद जिनकी केस स्टडी जाँचकर्ता से केस स्टडी डिज़ाइन करते समय पालन करने की अपेक्षा की जाती है, यिन एक अध्याय को शामिल करते हैं जिसमें वो वास्तविक आँकड़े इकट्ठा करने की प्रक्रियाओं पर चर्चा करने से पहले की तैयारी चरणों या आँकड़ा संग्रहण की नियोजन अवस्था की व्याख्या करते हैं। यह एक बार और इंगित करता है कि वह उस प्रक्रिया पर कितना जोर देते हैं जो वास्तविक आँकड़ा संग्रहण से पहले होती है या उस योजना पर जिसमें विस्तृत निर्देश शामिल होते हैं जिनकी शोधकर्ताओं को अपनी जाँच की यात्रा शुरू करने से पहले आवश्यकता होती है। केस स्टडी की योजना पर उनका जोर उस सावधानी से सम्बन्ध रखता है, जिसे वो बार-बार निर्दिष्ट करते हैं : “वास्तविकता में, आपकी बुद्धि, अहंकार, और भावनाओं पर केस स्टडी की माँग किसी भी अन्य शोध रणनीति की तुलना में कहीं अधिक हैं। इसका कारण यह है कि आँकड़ों के संग्रहण की प्रक्रियाओं को नियमित नहीं किया जाता है” (यिन, 2002, पृष्ठ 58)। आँकड़ों के संग्रहण की तैयारी को निरूपित करते समय, यिन केस स्टडी जाँचकर्ता के वांछित कौशलों, किसी विशिष्ट केस स्टडी के लिए प्रशिक्षण, जाँच के लिए एक प्रोटोकॉल का विकास, केस स्टडी नामांकनों की जाँच (केस के चयन के बारे में अन्तिम निर्णय लेना), और एक पायलट स्टडी के संचालन पर बल देते हैं। इस तैयारी में, वह विशेष रूप से पायलट केस स्टडी पर प्रकाश डालते हैं क्योंकि वह यह मानते हैं कि यह “आँकड़े की विषय वस्तु और उसके बाद की जाने वाली प्रक्रियाओं दोनों के सम्बन्ध में आँकड़ों के संग्रहण की आपकी योजनाओं को परिष्कृत करने में मदद करेगा” (यिन, 2002, पृष्ठ 79)। इस पहलू में, यिन ने स्टेक और मेरियम का समर्थन किया है जो पायलट केस स्टडी के बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्य को रेखांकित नहीं करते। इसके बजाय, वे मोटेतौर पर प्रत्येक आँकड़ों के संग्रहण करने के साधन के पायलट स्टडी पर ध्यान केन्द्रित करते हैं।

किसी यिनियन परिप्रेक्ष्य से, केस स्टडी शोध को साक्ष्य के कई स्रोतों पर निर्भर रहना चाहिए, जिसमें आँकड़ों को एक त्रिकोणीय तरीके में अभिसरित करने की आवश्यकता होती है, और आँकड़ों के विश्लेषण और संग्रहण को दिशा देने के लिए सैद्धान्तिक प्रस्थापनाओं के पूर्व विकास

से लाभ होता है। यिन का सुझाव है कि शोधकर्ता छह साक्ष्यिक स्रोतों का उपयोग करें : प्रलेखन (documentation), पुरालेखीय अभिलेख (archival records), साक्षात्कार, प्रत्यक्ष अवलोकन (participant observation) और भौतिक कलाकृतियाँ (physical artifacts), जिनमें से प्रत्येक की अपनी ताकतें और कमजोरियाँ हैं। उन्होंने यह भी ध्यान दिया कि ये सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले स्रोत हैं और पूरी सूची कहीं अधिक व्यापक है। आँकड़े एकत्र करने वाले साधनों की उनकी व्याख्या में "साक्ष्य के प्रत्येक स्रोत का उपयोग करने से जुड़ी प्रक्रियाएँ" (यिन, 2002, पृष्ठ 96) शामिल हैं, अर्थात शोधकर्ताओं को उनके प्रशिक्षण के भाग के रूप में आँकड़ों के संग्रहण के साधनों की विशिष्टताओं के बारे में परिचित कराना चाहिए। फिर वह उन सामान्य सिद्धान्तों की चर्चा करते हैं जो सभी छह साधनों और आँकड़ों के संग्रहण की सम्पूर्ण प्रक्रिया पर लागू होते हैं। उनका दावा है कि इन सामान्य सिद्धान्तों को पूर्व में अनदेखा किया गया है और उनकी पुस्तक में इनकी विस्तार से चर्चा की गई है, जिसमें (अ) साक्ष्य के विविध स्रोतों (दो या अधिक स्रोतों से साक्ष्य, लेकिन त्रिकोणीकरण (triangulation) के उद्देश्य के लिए तथ्यों या निष्कर्षों के एक ही समूह पर अभिसरण करना), (ब) किसी केस स्टडी का डाटाबेस (साक्ष्य का एक औपचारिक संयोजन जो अन्तिम केस स्टडी प्रतिवेदन से अलग है और जो नए शोधकर्ताओं को यह समझने में मदद करता है कि आँकड़ों को कैसे सँभालना या प्रबन्धित करना है), और (स) साक्ष्य की एक शृंखला (पूछे गए प्रश्नों, एकत्र किए गए आँकड़ों, और निकाले गए निष्कर्षों के बीच स्पष्ट जुड़ाव, जो "किसी साक्ष्य के व्युत्पन्न होने का अनुगमन करने में, प्रारम्भिक शोध प्रश्नों से लेकर अन्तिम केस स्टडी के निष्कर्ष तक;" यिन, 2002, पृष्ठ 83)। ये "अधिभावी सिद्धान्त", जैसा कि वह उल्लेख करते हैं, आँकड़ों के विधिमान्यकरण के लिए अनुकूल हैं जो जाँच की गुणवत्ता को अधिकतम करने की प्रक्रिया के हर चरण में यिन की पहली प्राथमिकता का गठन करते हैं।

आँकड़ों के संग्रहण में स्टेकियन दृष्टि यिन के वर्णन से अत्यन्त भिन्न है। उदाहरणस्वरूप, यिन जो जाँच के हर चरण की सटीक योजना के लिए तर्क देते हैं उनके विपरीत स्टेक (1995) का यह तर्क है "आँकड़ों का संग्रहण शुरू करने का कोई विशेष क्षण नहीं है" (पृष्ठ 49) क्योंकि जाँच प्रक्रिया में आँकड़ों का संग्रहण कुछ मूलभूत परिवर्तनों की ओर ले जा सकता है। यिन के परिप्रेक्ष्य से, विशेष रूप से इन प्रमुख संशोधनों से बचने के क्रम में, केस स्टडी शोधकर्ताओं को आँकड़ों के संग्रहण से पहले एक विवेकशील डिज़ाइन और उपक्रम का निर्माण करना चाहिए। इसके अलावा, केस स्टडी के विधि सम्मत आँकड़ों की स्टेक की परिभाषा यिन की तुलना में बहुत व्यापक है। जहाँ स्टेक का तर्क है कि "सभी आँकड़ों का एक बड़ा भाग अत्यन्त प्रभाववादी है, जिसे शोधकर्ता जैसे ही केस से पहली बार परिचित होता है तो वह अनौपचारिक रूप से उठाता है" (स्टेक, 1995, पृष्ठ 49), वहीं यिन यह स्वीकार नहीं करते कि यह आँकड़ों का एक

“बड़ा भाग” (considerable proportion) है जिसका शोधकर्ता संग्रहण कर सकते हैं और विश्लेषण के प्रयोजनों के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। मेरे विचार से, आँकड़ों को प्रभाववादी मानना, मेरे जैसे उभरते शोधकर्ताओं के लिए गम्भीर समस्याएँ ला सकता है। प्रभाव एक धारणा है जिसे वस्तुतः परिभाषित करना काफी मुश्किल है, तो मेरे और दूसरे प्रशिक्षु जाँचकर्ताओं के लिए केस के सम्बन्ध में अपने प्रभावों से आँकड़े बँटोरने का कार्य काफी भ्रामक होगा। मेरा प्रभाव क्या है और आँकड़ों के किसी समूह में क्या नहीं है, इन दोनों के बीच एक स्पष्ट अन्तर निकलना लगभग असम्भव है।

यद्‌यपि यिन के वर्णन जितना प्रभावी न होने के बावजूद, स्टेक का वर्णन उन कौशलों के महत्त्व पर प्रकाश डालता है जो कि शोधकर्ताओं को एक गुणात्मक शोध करने के लिए आवश्यक हैं। इनमें शामिल हैं “ज्ञान जो महत्त्वपूर्ण समझ की ओर ले जाता है, आँकड़ों के अच्छे स्रोतों को पहचानना, और इच्छित और अनिच्छित रूप से अपनी आँखों द्‌वारा देखी गई घटना की सत्यता और उनकी व्याख्या की मजबूती का परीक्षण करना। इसके लिए संवेदनशीलता और संशयवाद की आवश्यकता होती है” (स्टेक, 1995, पृष्ठ 50)। इस तर्क के बाद, मैं उनसे उन रणनीतियों का वर्णन करने की अपेक्षा करूँगा जो नए शोधकर्ताओं को इन कौशलों को विकसित करने में मदद कर सकती हैं जिन्हें मेरे लिए परिभाषित करना और समझाना मुश्किल है। उदाहरण के लिए, जब कोई व्यक्ति केस के करीब पहुँचने और आँकड़े एकत्र करने के दौरान संवेदनशील और संशयी होने की सलाह देता है, तो मुझे संवेदनशीलता और संशयवाद की मात्रा नहीं पता होगी या अगर ये मेरे पास नहीं हैं तो मैं इन कौशलों को कैसे अर्जित कर सकता हूँ। इस प्रकार, मेरी समझ से, शोधकर्ताओं के प्रशिक्षण के सम्बन्ध में यिन का वर्णन स्टेक के वर्णन का पूरक है क्योंकि पहला दृष्टिकोण आवश्यक जाँच कौशल हासिल करने के लिए अधिक ठोस रणनीतियाँ प्रदान करता है।

हालाँकि यह यिन के केस स्टडी प्रोटोकॉल के रूप में संरचित और विस्तृत नहीं है, स्टेक का प्रोटोकॉल यह सुझाव देता है कि आँकड़ों के संग्रहण के लिए एक योजना बनाई जानी चाहिए जिसमें “शोध प्रश्नों की केस सूची की परिभाषा, सहायकों की पहचान, आँकड़ों के स्रोत, समय का आवण्टन, खर्चे, अभिप्रेत प्रतिवेदन” शामिल होने चाहिए (स्टेक, 1995, पृष्ठ 51)। हालाँकि, इस अर्थपूर्ण योजना के बारे में सवाल यह है कि “शोधकर्ताओं को यह योजना कब क्रियान्वित करने के लिए तैयार होना है?” स्टेक केस से आँकड़ों के संग्रह को शुरू करने के लिए एक सटीक बिन्दु निर्धारित नहीं करते हैं। इसके अलावा, स्टेक कार्यवाही की इस योजना को तैयार करने व क्रियान्वित करने के लिए एक विस्तृत और पर्याप्त मार्गदर्शिका प्रदान नहीं करते हैं। आँकड़ा के संग्रहण के साधनों के लिए, स्टेक गुणात्मक केस स्टडी शोध में अवलोकन, साक्षात्कार और

दस्तावेज समीक्षा का उपयोग करने का सुझाव देते हैं। यिन के विपरीत, वह मात्रात्मक आँकड़ों के स्रोतों के उपयोग से इनकार करते हैं क्योंकि केस स्टडी का उनका दृष्टिकोण पूरी तरह से गुणात्मक है।

आँकड़ों के संग्रहण के उनके परिप्रेक्ष्य में, मेरियम (1998) मात्रात्मक और गुणात्मक शोध के बीच असमानताओं को बताना जारी रखती हैं, जो कि मुख्यत: इसलिए है क्योंकि उनकी पुस्तक का प्राथमिक केन्द्र बिन्दु सामान्य रूप से गुणात्मक शोध है। हालाँकि, जब स्टेकियन गुणात्मक केस स्टडी दृष्टिकोण से तुलना की गई तो मेरियम का वर्णन, आँकड़ा संग्रहण प्रक्रियाओं के लिए अधिक व्यापक और विस्तृत मार्गदर्शन प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, जैसा कि उनकी पुस्तक के खण्डों के शीर्षक सुझाते हैं (*प्रभावी* साक्षात्कारों का संचालन, एक *सचेत* अवलोकनकर्ता होने के नाते, दस्तावेजों से आँकड़ों को *खोजना*), मेरियम उन तकनीकों और प्रक्रियाओं को प्रस्तुत करती हैं जो शोधकर्ताओं को आँकड़ा संग्रहण के साधनों के प्रभावी उपयोगकर्ता बनने के लिए चाहिए। इसकी व्याख्या करने के लिए, साक्षात्कारों का आँकड़ों के संग्रहण के उपकरण के रूप में वर्णन करते समय, वे साक्षात्कारों के निम्नलिखित पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित करती हैं और एक केस स्टडी में अनुलेखित साक्षात्कारों के कुछ अंश बताती हैं : विभिन्न प्रकार, अच्छे सवाल पूछना, प्रश्न जिनसे बचना चाहिए, जाँच, साक्षात्कार मार्गदर्शिका, साक्षात्कार को शुरू करना, साक्षात्कारकर्ता और उत्तरदाता के बीच बातचीत, साक्षात्कार की रिकॉर्डिंग और साक्षात्कार आँकड़ों का मूल्यांकन। न तो स्टेक (1995) और न ही यिन (2002) ने आँकड़ों के संग्रहण की प्रक्रिया में साक्षात्कार के इन पहलुओं पर उतना ध्यान केन्द्रित किया जितना कि मेरियम ने किया। इसलिए, वे नए जाँचकर्ता जो गुणात्मक केस स्टडी करने की योजना बना रहे हैं, वे आँकड़ों के संग्रहण के दिशा निर्देशों के सन्दर्भ में मेरियम के वर्णन को स्पष्ट रूप से ज्यादा उपयोगी और लाभकारी मान सकते हैं।

केस स्टडी के तीन भिन्न परिप्रेक्ष्यों की समीक्षा के बाद, एक उभरते हुए जाँचकर्ता के रूप में मुझे लगता है कि केस स्टडी में आँकड़ों के संग्रहण के बारे में यिन और मेरियम के वर्णन एक दूसरे के पूरक हैं। यिन के तीन सिद्धान्तों और आँकड़ा संग्रहण प्रक्रियाओं के लिए मेरियम के व्यापक मार्गदर्शन के संयोजन से मुझे सबसे अधिक फायदा होगा। चूँकि मैं एक गुणात्मक केस स्टडी अवधारित कर बना रहा हूँ, मेरे औचित्य को ज्यादा स्पष्ट करने के लिए, मैं आँकड़ा संग्रहण प्रक्रियाओं के सम्बन्ध में मेरियम के साथ जुड़े रहने की योजना बना रहा हूँ। हालाँकि, मुझे यिन के वर्णन को उधार लेने की आवश्यकता है क्योंकि उनके सिद्धान्त मेरे शोध के प्रारम्भ में बनाई गई सैद्धान्तिक प्रस्थापनाओं, प्रश्नों व आँकड़ों के संग्रहण के बीच कड़ी पर निरन्तर मेरा ध्यान केन्द्रित करते हैं जिससे जाँच के आँकड़ों के विधिमान्यकरण और समग्र रूप

से सम्बद्धता को प्रोत्साहन मिलेगा। अन्त में, केस स्टडी के तीन दृष्टिकोणों के विश्लेषण से निम्नलिखित निष्कर्ष का प्रतिफल आएगा : मेरियम और स्टेक गुणात्मक शोधकर्ताओं के रूप में अपनी ज्ञानमीमांसीय प्रतिबद्धताओं पर बहुत जोर देते हैं, इसलिए वे मात्रात्मक आँकड़ों के स्रोतों को केस स्टडी के लिए आँकड़े इकट्ठे करने का विधि सम्मत तरीका नहीं मानते हैं। इस प्रकार, आँकड़ों के संग्रहण के सम्बन्ध में त्रिकोणीकरण की उनकी परिभाषा प्रतिबन्धित प्रतीत होती है। दूसरी तरफ, यिनियन परिप्रेक्ष्य से, शोध प्रक्रिया की हर अवस्था में किसी जाँच की गुणवत्ता, वैधता व विश्वसनीयता की वृद्धि पर निर्भर करती है तो त्रिकोणीकरण के उद्देश्य के लिए, जो विशेष रूप से वैधता को प्रभावित करते हैं, यिन छः साधन सुझाते हैं।

आँकड़ों का विश्लेषण

ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे तीनों प्रविधिकारों के ज्ञानमीमांसीय अवस्थितियों ने उनके केस स्टडी के आँकड़ों के विश्लेषण के दृष्टिकोण को भी प्रभावित किया है। अर्थात वह कारण जिसकी वजह से वे केस स्टडी आँकड़ों के विश्लेषण के बारे में जो अलग-अलग सुझाव दे रहे हैं, वह वास्तविकता और ज्ञान को समझने में उनकी विभिन्नताएँ है। यिन (2002) की विश्लेषण की परिभाषा में “एक अध्ययन की प्रारम्भिक प्रस्थापनाओं को सम्बोधित करने के लिए जाँच, वर्गीकरण, सारणीयन, परीक्षण, या अन्यथा दोनों मात्रात्मक और गुणात्मक साक्ष्यों को पुनर्संयोजित करना शामिल है” (पृष्ठ 109), जो मात्रात्मक और गुणात्मक शोध के बीच द्विभाजन के विरोध के साथ संगत है। चूँकि शोधकर्ता केस स्टडी के अपने प्रतिपादन में गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों साक्ष्य सँभाल रहे होंगे, अतः उन्हें दोनों प्रकार के साक्ष्य का विश्लेषण करने में सक्षम होना चाहिए। इसके अलावा, यिनियन परिप्रेक्ष्य से शोधकर्ताओं को अत्यधिक संरचित विश्लेषणात्मक दिशा निर्देशों और सिद्धान्तों की आवश्यकता होती है क्योंकि शोध प्रविधि के रूप में केस स्टडी अभी भी विकसित हो रहा है और सुपरिभाषित रणनीतियों और तकनीकों की विशिष्टता की कमी सह रहा है। इस मुद्दे को हल करने के लिए, यिन सामान्य रणनीतियों और विशिष्ट रणनीतियों दोनों का वर्णन करते हैं। शोधकर्ताओं को प्रत्येक में बाद वाले की अपेक्षा पहले वाली रणनीति को लागू करना चाहिए। फिर उन्होंने सुझाव दिया कि शोधकर्ताओं को उच्च गुणवत्ता वाले विश्लेषण पर जोर देने के लिए चार अधिभावी सिद्धान्तों से जुड़े रहना चाहिए। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए नए शोधकर्ता इस अत्यधिक निर्देशित दृष्टिकोण को बहुत उपयोगी पा सकते हैं। चूँकि वे बिना किसी विशेषज्ञता और अनुभव के शोध के क्षेत्र में कदम रखते हैं, इसलिए उन्हें काफी मार्गदर्शन की आवश्यकता होगी।

यिन केस स्टडी में विश्लेषणात्मक प्रक्रियाओं पर चर्चा करते हुए गुणवत्ता शोध अर्थात वैधता और विश्वसनीयता के लिए अपने मानदण्डों को सम्बोधित करते हैं। उनके द्वारा सुझाई गई सभी तकनीकें और रणनीतियाँ विश्लेषण के दौरान वैधता और विश्वसनीयता बढ़ाने के लिए अनुकूल हैं। किसी यिनियन परिप्रेक्ष्य से, शोधकर्ता इन मानदण्डों को सुपरिभाषित और सुसंरचित आँकड़ों के विश्लेषण की प्रक्रियाओं के माध्यम से नियंत्रित करते हैं। यिन ऐसा मानते हुए प्रतीत होते हैं कि उनके द्वारा वर्णित किए गए विश्लेषणात्मक चरणों और तकनीकों के माध्यम से शोधकर्ता केस के बारे में वस्तुनिष्ठ सत्य या सबसे अनुमानित वस्तुनिष्ठ सत्य तक पहुँच पाते हैं। यह धारणा स्पष्ट रूप से उस दार्शनिक परम्परा को दर्शाती है जहाँ से यिन आते हैं।

स्टेक (1995) विश्लेषण को “एक ऐसे तत्त्व के रूप में परिभाषित करते हैं जो पहली धारणाओं के साथ-साथ अन्तिम संकलनों को अर्थ देता है” (पृष्ठ 71)। एक स्टेकियन दृष्टिकोण में, “विश्लेषण का अनिवार्य रूप से मतलब है... हमारी धारणाओं और हमारे अवलोकनों को अलग करना” (पृष्ठ 71)। आँकड़ों के विश्लेषण के बारे में उनके तर्क आँकड़ों के संग्रहण के अनुरूप हैं। वह आँकड़ों के मुख्य स्रोत के रूप में शोधकर्ताओं की धारणाओं पर आश्रित रहते हैं और विश्लेषण के रूप में उनका अर्थ निकालते हैं। यद्यपि वह विश्लेषण प्रोटोकॉल के उपयोग को मानते हैं “जिससे कि (शोधकर्ताओं को) अपने पूर्व ज्ञान से क्रमबद्ध तरीके से निकालने है और गलत धारणा को कम करने में मदद मिलती है,” वह प्रोटोकॉल के मार्गदर्शन की अपेक्षा अन्तर्दृष्टि व धारणा को प्राथमिकता देते हैं (स्टेक 1995, पृष्ठ 72)। गुणात्मक परम्परा में एक आम प्रवृत्ति के रूप में, उनका सुझाव है कि शोधकर्ताओं को आँकड़ों के संग्रहण और विश्लेषण की प्रक्रियाओं का एक साथ संचालन करना चाहिए। इसलिए शोध प्रक्रिया में विश्लेषण शुरू करने के लिए कोई सटीक बिन्दु नहीं है क्योंकि आँकड़ों का संग्रहण शुरू करने के लिए भी कोई सटीक बिन्दु नहीं है। इसके अलावा, स्टेक केस स्टडी के आँकड़ों के विश्लेषण में गुणात्मक और मात्रात्मक उन्मुखीकरण के बीच भेद को अधिक सुस्पष्ट करने पर जोर देना जारी रखते हैं। वह दृढ़ता से कहते हैं कि विश्लेषण अवस्था एक ऐसा बिन्दु है जहाँ पर ये दोनों उन्मुखीकरण एक दूसरे से सबसे ज्यादा भिन्न होते हैं। यह अभिकथन कठोर शोध के लिए दोनों के बीच दार्शनिक मतभेदों की अपेक्षा समानता पर ध्यान केन्द्रित करने के यिन के तर्क का विरोध करता है।

स्टेक आँकड़ों का विश्लेषण करने के दो रणनीतिक तरीकों का वर्णन करते हैं : श्रेणीबद्ध एकत्रीकरण और प्रत्यक्ष व्याख्या, जिन्हें वे केस स्टडी आँकड़ों के उपयोग के लिए दो सामान्य रणनीतियों के रूप में प्रस्तुत करते हैं। फिर, वह उन प्रतिरूपों को खोजने के लिए विशिष्ट तकनीकों को प्रस्तुत करते हैं जो दो सामान्य रणनीतियों का एक अनिवार्य हिस्सा हैं। हालाँकि, वह यह मानते हैं कि ये रणनीतियाँ केस स्टडी विश्लेषण को संचालित करने का सही तरीका

नहीं हैं और वह आगे कहते हैं कि “प्रत्येक शोधकर्ता को अनुभव और चिन्तन के माध्यम से, विश्लेषण के उन रूपों की खोज करनी चाहिए जो उसके लिए उपयोगी हैं (स्टेक, 1995, पृष्ठ 77)। हालाँकि, नए शोधकर्ताओं को अपने विशेषज्ञ समकक्षों की तुलना में अधिक मार्गदर्शन की आवश्यकता होगी क्योंकि उनके पास अभी तक पर्याप्त अनुभव नहीं है। वे यह सुझाव देते हैं कि उन्हें अपनी धारणा और अन्तर्ज्ञान पर भरोसा करना चाहिए जिससे उन्हें उस तरह के मार्गदर्शन की आवश्यकता नही होगी। दूसरी ओर, स्टेक के विपरीत, यिन यह मानते हुए प्रतीत होते हैं कि उनकी किताब में प्रस्तुत प्रविधि और डिज़ाइन बिलकुल सही है या केस स्टडी प्रविधियों के संचालन के सही तरीके के सबसे समीप है, जो उनकी पुस्तक के शीर्षक में भी स्पष्ट है।

अपनी पुस्तक के प्रयोजन की वजह से जिससे पुस्तक का विन्यास प्रभावित हुआ है, मेरियम गुणात्मक शोध में आँकड़ों के प्रबन्धन और विश्लेषण तकनीकों की चर्चा करती हैं और उससे पहले वह तीन प्रतिदर्श जाँचों में केस स्टडी प्रविधि के विशेष गुणों को उदाहरण देकर समझाएँगी। उनका केस स्टडी के लिए गुणात्मक आँकड़ों के विश्लेषण का मॉडल न केवल स्टेक की बल्कि यिन की केस स्टडी व्याख्या के भी काफी समान ही प्रतीत होता है। सबसे पहले, वह आँकड़ों के विश्लेषण को “आँकड़े से समझ बनाने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित करती हैं। और आँकड़ों से समझ बनाने में समेकित करना, कम करना, और लोगों ने क्या कहा तथा शोधकर्ता ने क्या देखा और पढ़ा इसकी व्याख्या को शामिल करती हैं– यह अर्थ के निर्माण की प्रक्रिया है” (मेरियम, 1998, पृष्ठ 178)। स्टेक की परिभाषा की तुलना में जिसमें उन्होंने विश्लेषण में शोधकर्ताओं की धारणाओं व अन्तर्ज्ञान पर जोर दिया है, मेरियम की गुणात्मक आँकड़ों के विश्लेषण की परिभाषा शोध में ज्ञानमीमांसा रचनावाद की ज्यादा विस्तृत अनुप्रयोग करती हुई प्रतीत होती है और शोधकर्ताओं के लिए ज्यादा ठोस मार्गदर्शन उपलब्ध कराती है। विश्लेषणात्मक प्रक्रिया में धारणाओं और अन्तर्ज्ञान से ज्यादा समेकन, न्यूनीकरण और व्याख्या रचनात्मकतावाद के सुस्पष्ट और ठोस अनुप्रयोग में मदद करते हैं।

दूसरा, मेरियम आँकड़ों का संग्रहण और विश्लेषण एक साथ करने पर विस्तृत व्याख्या करती है जिसका स्टेक ने संक्षिप्त उल्लेख किया है। उन्होंने यह समझाने के लिए, कि क्यों और कैसे आँकड़ों को एक साथ एकत्र और विश्लेषित किया जा सकता है, अध्याय के एक भाग को समर्पित किया है। वह इस बात पर भी प्रकाश डालती हैं कि यह गुणात्मक शोध डिज़ाइन का एक सर्वोत्कृष्ट गुण है जो इसे प्रत्यक्षवादी ज्ञानमीमांसा द्वारा उन्मुख शोध से अलग करता है। इसके अलावा, वह एक प्रतिवाद करती हैं : वह एक पुनरावर्ती और गत्यात्मक आँकड़ों के संग्रहण और विश्लेषण की वकालत करती हैं और उनका कहना है कि “एक बार सारे आँकड़े संग्रहित होने का मतलब यह नहीं है कि विश्लेषण समाप्त हो गया है।” बल्कि इसके विपरीत अध्ययन के

बढ़ने के साथ-साथ जैसे ही एक बार सभी आँकड़े हमारे पास आ जाते हैं तो विश्लेषण अधिक गहन होता जाता है” (मेरियम, 1998, पृष्ठ 155)। यह समवर्ती और परस्पर प्रक्रिया इस तथ्य से उपजी है कि गुणात्मक प्रविधिकार एक उभरती हुई डिज़ाइन की वकालत करते हैं। आँकड़ों के प्रारम्भिक विश्लेषण में शोध के आगामी चरणों में परिवर्तन हो सकते हैं।

तीसरा, मेरियम ने आँकड़ों का प्रबन्धन करने के लिए रणनीतियों को अध्याय का एक भाग समर्पित किया है जो यिन और स्टेक दोनों के वर्णन के पूरक है। विशेष रूप से उन नए शोधकर्ताओं को, जो आँकड़ों को सँभालने के लिए एक कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर प्रोग्राम का उपयोग करना चाहते हैं, अध्याय का यह भाग काफी उपयोगी लगेगा। यह भाग नए शोधकर्ताओं को आँकड़ों के प्रबन्धन के लिए कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर प्रोग्रामों का उपयोग के बारे में ज्ञान देता है। अन्तिम बिन्दु के रूप में, मेरियम के विश्लेषण के स्तरों का वर्णन स्टेक के श्रेणीबद्ध एकत्रीकरण और गुणात्मक आँकड़ों में प्रतिरूपों की खोज के बारे में चर्चा का पूरक है। मेरियम गुणात्मक आँकड़ों के विश्लेषण के लिए अधिक गहन वर्णन और अधिक पूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करती हैं। स्टेक के शब्दों में यह “धारणाओं और उपायों” का एक संयोजन है क्योंकि मेरियम गुणात्मक विश्लेषणात्मक तकनीकों और प्रक्रियाओं में से प्रत्येक के कार्यान्वयन के लिए चरण-दर-चरण निर्देश प्रस्तुत करती हैं, जिसकी शोधकर्ताओं को आवश्यकता होती है ताकि जिन आँकड़ों का वे विश्लेषण कर रहे हैं उससे सिद्धान्त विकसित किया जा सके।

आँकड़ों का विधिमान्यकरण

आँकड़ों के विधिमान्यकरण के बारे में तीनों प्रविधिकार विभिन्न विचार रखते हैं जो खोज में वैधता और विश्वसनीयता की धारणाओं से जुड़े हैं। खासतौर पर, मेरियम और स्टेक के दृष्टिकोण यिन से प्रमान्य रूप से भिन्नता रखते हैं, जो उनके दार्शनिक नजरियों में अन्तर की अभिव्यक्ति है। वैधता और विश्वसनीयता के नियंत्रण के माध्यम से, प्रत्यक्षवादी शोध परम्परा का उद्देश्य छानबीन के तहत केस के बारे में एक सटीक या अनुमानित ज्ञान का अभिग्रहण करना या उसे खोजना है। हालाँकि, रचनात्मकतावाद इस विचार को सामने रखता है कि ज्ञान के कई संस्करण हैं क्योंकि यह “ज्ञाता” और “ज्ञात” के बीच किसी निर्माण का एक उत्पाद है। मेरियम और स्टेक इस तथ्य से अवगत हैं कि वैधता और विश्वसनीयता की अवधारणाओं को गुणात्मक जाँच में लागू करना लगभग असम्भव है चूँकि वे पहली बार प्रत्यक्षवादी परम्परा में उत्पन्न हुए थे। इन मूल रूप से प्रत्यक्षवादी धारणाओं को गुणात्मक शोध में लागू करना जो कि रचनात्मकतावादी ज्ञानमीमांसा द्वारा उन्मुख है, सम्भव नहीं है। इसलिए, मेरियम और स्टेक की वैधता और विश्वसनीयता की अवधारणाएँ यिन की अवधारणाओं से काफी भिन्न हैं।

यिन अपनी पुस्तक में केस स्टडी डिज़ाइन की प्रक्रियाओं की व्याख्या करने से पहले शुरू में ही पारम्परिक अर्थों में वैधता और विश्वसनीयता (निर्माण [construct], आन्तरिक और बाहरी) की व्याख्या करते हैं और शोध की गुणवत्ता का निर्णय करने के लिए उनका मानदण्ड के रूप में अनुमान करते हैं। वे अपनी पुस्तक के शेष भाग में बार-बार इन मानदण्डों के सर्वोपरि महत्त्व के बारे में पाठकों को याद दिलाते हैं जो "सभी सामाजिक विज्ञान प्रविधियों के लिए सामान्य हैं" (यिन, 2002, पृष्ठ 34)। उनका सुझाव है कि केस स्टडी शोधकर्ताओं को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे पूरी जाँच को डिज़ाइन और कार्यान्वित करते समय इन मानदण्डों को ध्यान में रखें। क्योंकि शोध की गुणवत्ता और कठोरता का मतलब इन मानदण्डों की उपलब्धि है, "इस पुस्तक का महत्त्वपूर्ण नवाचार केस अध्ययनों को करते समय इन चार परीक्षणों से निपटने के लिए अनेक युक्तियों की पहचान करना है" (यिन, 2002, पृष्ठ 34)। यिन के अनुसार, केस स्टडी शोधकर्ताओं को निर्माण मान्यकरण (त्रिकोणीकरण के माध्यम से साक्ष्य के कई स्रोतों, साक्ष्य की शृंखला, और सदस्य की जाँच), आन्तरिक मान्यकरण (स्थापित विश्लेषणात्मक तकनीकों के उपयोग के माध्यम से जैसे– पैटर्न मिलान), बाह्य मान्यकरण (विश्लेषणात्मक सामान्यीकरण के माध्यम से), और विश्वसनीयता (केस स्टडी प्रोटोकॉल और डेटाबेस के माध्यम से) की गारण्टी देने की आवश्यकता है। यिन जो ज्ञानमीमांसीय परम्परा से आते हैं वो इन परीक्षणों पर काफी जोर देते हैं और इन सभी चार परीक्षणों के न केवल प्रारूप निर्माण चरण में बल्कि आँकड़ों के संग्रहण, विश्लेषण और संरचनागत चरणों के लिए युक्तियाँ प्रस्तुत करते हैं। उनके पास मेरियम और स्टेक के विपरीत इन निर्माणों (constructs) पर कोई अध्याय नहीं है, लेकिन उनका जोर पूरी पुस्तक में व्याप्त है।

स्टेक "त्रिकोणीकरण" (Triangulation) नामक अध्याय में संग्रहित आँकड़ों के विधिमान्यकरण से सम्बन्धित मुद्दों पर चर्चा करते हैं। वह आँकड़ों को त्रिकोणीय बनाने के लिए चार रणनीतियाँ प्रस्तावित करते हैं : आँकड़ों के स्रोत का त्रिकोणीकरण, अन्वेषक त्रिकोणीकरण, सिद्धान्त त्रिकोणीकरण, और प्रविधि सम्बन्धी त्रिकोणीकरण। वह आँकड़ों के विधिमान्यकरण से सम्बन्धित निम्नलिखित प्रश्न भी पूछते हैं : "हमारे पूरे केस स्टडी कार्य के दौरान, हम आश्चर्य करते हैं, 'क्या हमने यह सही तरह से किया?' न केवल 'क्या हम केस का एक व्यापक और सटीक विवरण उत्पन्न कर रहे हैं?' बल्कि 'क्या हम अपनी इच्छित व्याख्याओं का विकास कर रहे हैं?'" (स्टेक, 1995, पृष्ठ 107)। इस अध्याय में पहली बार, उन्होंने सटीकता, वैकल्पिक स्पष्टीकरणों और अनुशासन के बारे में अपनी चिन्ता का उल्लेख किया : "सटीकता और वैकल्पिक स्पष्टीकरणों इन दोनों की खोज में, हमें अनुशासन की आवश्यकता होती है, हमें ऐसे प्रोटोकॉल की आवश्यकता होती है जो केवल 'सही तरीके से प्राप्त करने' के लिए केवल अन्तर्दृष्टि और

अच्छे इरादे पर निर्भर न हों।" (स्टेक, 1995, पृष्ठ 107)। वह विधिमान्यकरण के मुद्दे पर चर्चा करते समय अपने सहज और प्रभावपूर्ण दृष्टिकोण को छोड़ते दिखाई देते हैं, लेकिन आँकड़ों के संग्रहण और विश्लेषण जैसे केस स्टडी डिज़ाइन के प्रत्येक चरण की अपनी व्याख्या में यह दृष्टिकोण व्यापक नहीं लगता है।

इसके अलावा, स्टेक आँकड़ों के विधिमान्यकरण के उनके मत को खुद को रचनात्मकतावादी ज्ञानमीमांसा के रूप में व्यक्त करते हैं, जो कि यिन (2002) के मत के विपरीत है। वह टिप्पणी करते हैं कि "अधिकांश गुणात्मक शोधकर्ता न केवल यह विश्वास करते हैं कि केस के कई परिप्रेक्ष्य या विचार हैं जिन्हें प्रस्तुत करने की आवश्यकता है, लेकिन विवाद से परे, सबसे अच्छे मत को स्थापित करने का कोई तरीका नहीं है" (पृष्ठ 108)। वे यह भी कहते हैं कि नैतिक दायित्वों के कारण, गुणात्मक शोधकर्ताओं को "गलतबयानी और गलतफहमी को न्यूनतम करने की" आवश्यकता है (पृष्ठ 109)। इस न्यूनीकरण के उद्देश्य के लिए, स्टेक कुछ प्रोटोकॉल और प्रक्रियाओं के उपयोग का सुझाव देते हैं जो ऐसे "प्रयासों जो आँकड़ों के अवलोकन की वैधता को खोजने के लिए जानबूझकर प्रयास करने के लिए आँकड़ों के एकत्रीकरण की सामान्य पुनरावृत्ति से परे जाते हैं" (स्टेक, 1995, पृष्ठ 109)। इन प्रोटोकॉल के माध्यम से सदस्य की जाँच के साथ शोधकर्ता विचार रखते हैं जिससे "आवश्यक पुष्टिकरण का लाभ हो, विवेचना में विश्वास की वृद्धि हो, किसी अभिकथन की समानता का प्रदर्शन हो" (स्टेक, 1995, पृष्ठ 112)। वे कथित रूप से केस के बारे में बहुत विश्वसनीय व्याख्या या ज्ञान खोजने की कोशिश करेंगे, जिसका यिन दृढ़ता से विरोध करेंगे।

आँकड़ों के विधिमान्यकरण पर मेरियम का मत भी उनकी ज्ञानमीमांसीय प्रतिबद्धताओं को प्रदर्शित करता है। वह बताती हैं, "गुणात्मक शोध में अन्तर्निहित को लेकर एक पूर्वधारणा यह है कि वास्तविकता समग्रात्मक, बहुआयामी होती है, और लगातार बदलती रहती है; यह मात्रात्मक शोध की तरह खोजे जाने, देखे जाने, और मापे जाने की प्रतीक्षा करती कोई एकल, निश्चित, वस्तुनिष्ठ घटना नहीं है" (मेरियम, 1998, पृष्ठ 202)। इस पूर्वधारणा के प्रकाश में, वह बताती हैं कि कैसे गुणात्मक शोध वैधता और विश्वसनीयता की धारणाओं तक पहुँचता है और इस दृष्टिकोण को मात्रात्मक शोध में अन्तर्निहित प्रासंगिक पूर्वधारणाओं के साथ जोड़ता है। आँकड़ों के विधिमान्यकरण के बारे में मेरियम की अवधारणा स्टेक की अवधारणा के साथ संरेखित है। वह तर्क देती हैं कि "गुणात्मक अध्ययन पाठक को एक पर्याप्त विवरण के साथ यह दर्शाता है कि लेखक का निष्कर्ष 'समझपूर्ण' हैं" (मेरियम, 1998, पृष्ठ 199), जिससे उनकी व्याख्या की विश्वसनीयता बढ़ती है।

वैधता और विश्वसनीयता वे अवधारणाएँ हैं, जिन्हें सबसे पहले प्राकृतिक विज्ञानों में अभिगृहीत किया गया था और सामाजिक विज्ञानों में मात्रात्मक शोध द्वारा उधार लिया गया था। इसलिए इन शब्दों को रचनावादी ज्ञानमीमांसा के साथ स्वीकारना, जो गुणात्मक शोध को सुदृढ़ करती है, गुणात्मक शोध प्रविधिकारों के लिए एक पेचीदा कार्य है जिसकी मेरियम की पुस्तक में बड़े पैमाने पर चर्चा की गई है। मेरियम का मानना है कि आँकड़ों के विधिमान्यकरण मानदण्डों को ऐसी किसी जाँच में लागू करना, जो उन शोधकर्ताओं द्वारा संचालित की जाती है जो पूरी तरह से अलग और विरोधी ज्ञानमीमांसा से आ रहे हैं, 'किसी अनुपयुक्त वस्तु का कुछ" है (मेरियम, 1998, पृष्ठ 206)। इसलिए, वह संक्षेप में बताती हैं कि कैसे गुणात्मक प्रविधिकार इन धारणाओं की कल्पना करते हैं और वे कौन-से विकल्प प्रस्तुत करते हैं। फिर, वह तकनीकें या रणनीतियाँ प्रदान करती हैं, जो गुणात्मक शोधकर्ता वैधता और विश्वसनीयता को बढ़ाने के लिए उस अर्थ में उपयोग में ला सकते हैं जिसमें वे गुणात्मक परम्परा में संकल्पित हैं। सामान्य तौर पर, स्टेक की तुलना में, मेरियम आँकड़ों के विधिमान्यकरण की गुणात्मक समझ के लिए एक अधिक व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं। दूसरी ओर, स्टेक के त्रिकोणीकरण पर चर्चा ही एकमात्र ऐसा हिस्सा है जो मेरियम के आँकड़ों के विधिमान्यकरण के वर्णन का पूरक हो सकता है। नए शोधकर्ता, जो विशेष रूप से कोई गुणात्मक केस स्टडी का संचालन करने की योजना बना रहे हैं, स्टेक के त्रिकोणीकरण की व्याख्या के साथ-साथ मेरियम की पुस्तक में दिए गए विवरणों और दिशा निर्देशों का अधिक उपयोग करेंगे।

निष्कर्ष

तीन केस स्टडी दृष्टिकोणों की तुलना को समेटते हुए, मैं एक सारणी प्रस्तुत करता हूँ (सारणी 1 देखें), जो उन दृष्टिकोणों का एक समग्रात्मक संश्लेषित मूल्यांकन प्रदान करने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त होगी।

सारणी 1. तीन केस स्टडी दृष्टिकोणों की तुलना

रुचि के आयाम	**रॉबर्ट यिन की *केस स्टडी रिसर्च : डिज़ाइन एंड मेथड्स***	**रॉबर्ट स्टेक की *द आर्ट ऑफ़ केस स्टडी रिसर्च***	**शरन मेरियम की *क्वालिटेटिव रिसर्च एंड केस स्टडी एप्लीकेशन्स इन एजुकेशन***
ज्ञानमीमांसीय प्रतिबद्धताएँ	प्रत्यक्षवाद	रचनात्मकतावाद और अस्तित्ववाद (गैर-नियतत्त्ववाद)	रचनात्मकतावाद
केस और केस स्टडी को परिभाषित करना	**केस** "अपने वास्तविक जीवन के सन्दर्भ में एक समकालीन घटना है, खासकर जब एक घटना और सन्दर्भ के बीच की सीमाएँ स्पष्ट नहीं होती हैं और शोधकर्ता का घटना और सन्दर्भ पर बहुत कम नियंत्रण होता है" (पृष्ठ 13)। **केस स्टडी** एक अनुभवजन्य जाँच है जो अभिरुचि की घटना से सम्बन्धित प्रश्नों "कैसे" या "क्यों" को सम्बोधित करते हुए उपरोक्त परिभाषा के अनुरूप केस या केसों की जाँच करती है।	**केस** "एक विशिष्ट, एक जटिल, कार्यशील विषय," अधिक विशेष रूप से "एक एकीकृत प्रणाली", जिसमें "एक सीमा और कार्यशील हिस्से होते हैं" और उद्देश्यपूर्ण (सामाजिक विज्ञान और मानव सेवाओं में) (पृष्ठ 2) है। **गुणात्मक** केस स्टडी "एक एकल केस की विशिष्टता और जटिलता का एक अध्ययन है, जो महत्वपूर्ण परिस्थितियों के भीतर इसकी गतिविधि को समझने के लिए किया जा रहा है" (पृष्ठ xi)। **विशेषताओं को परिभाषित करना :** *समग्रात्मक* (घटना और उसके सन्दर्भों के बीच अन्तर्सम्बन्ध पर विचार करना); *अनुभवजन्य* (क्षेत्र में उनके अवलोकनों पर अध्ययन को आधार बनाना); *व्याख्यात्मक* (उनके अन्तर्ज्ञान पर निर्भर रहना और शोध को मूल	**केस** "एक विषय है, एक एकल सत्व, एक इकाई है जिसके चारों ओर सीमाएँ हैं" (पृष्ठ 27) और यह एक व्यक्ति, एक कार्यक्रम, एक समूह, एक विशिष्ट नीति इत्यादि हो सकता है। **गुणात्मक** केस स्टडी "एक गहन, समग्रात्मक विवरण और एक बाध्य घटना जैसे कि एक कार्यक्रम, एक संस्था, एक व्यक्ति, एक प्रक्रिया, या एक सामाजिक इकाई का विश्लेषण है" (पृष्ठ xiii)। **विशेषताओं को परिभाषित करना** : *विशिष्टतापरक* (विशेष स्थिति, आयोजन, कार्यक्रम, या घटना पर ध्यान केन्द्रित करना); *वर्णनात्मक* (अध्ययनशील घटना का एक समृद्ध, गहन विवरण देना); *अनुमानी* (अध्ययनशील घटना की पाठक की समझ को उजागर करना)

रुचि के आयाम	रॉबर्ट यिन की *केस स्टडी रिसर्च : डिज़ाइन एंड मेथड्स*	रॉबर्ट स्टेक की *द आर्ट ऑफ़ केस स्टडी रिसर्च*	शरन मेरियम की *क्वालिटेटिव रिसर्च एंड केस स्टडी एप्लीकेशन्स इन एजुकेशन*
		रूप से किसी शोधकर्ता-विषय बातचीत के रूप में देखना); *प्रभावी* (विषयों के स्थानापन्न अनुभवों को एक भावुक परिप्रेक्ष्य में दर्शाना)।	
केस स्टडी को डिज़ाइन करना	डिज़ाइन "उस तार्किक अनुक्रम को सन्दर्भित करती है जो किसी अध्ययन के प्रारम्भिक शोध प्रश्नों के लिए और अन्ततः, अपने निष्कर्षों के लिए अनुभवजन्य डाटा को जोड़ता है" (पृष्ठ 20)। **चार प्रकार** की केस स्टडी डिज़ाइन में एकल समग्रात्मक डिज़ाइन, एकल सन्निहित डिज़ाइन, बहु समग्रात्मक डिज़ाइन और बहु सन्निहित डिज़ाइन शामिल हैं। केस स्टडी डिज़ाइन के **पाँच घटक** हैं : किसी अध्ययन के प्रश्न; उसकी प्रस्थापनाएँ, यदि कोई हों; विश्लेषण की इसकी इकाई (याँ); प्रस्थापना से आँकड़ों को जोड़ने वाला तर्क; और निष्कर्षों की व्याख्या करने के लिए मानदण्ड। मात्रात्मक और गुणात्मक	लचीली डिज़ाइन जो शोधकर्ताओं को डिज़ाइन से शोध के लिए आगे बढ़ने के बाद भी बड़े बदलाव करने की अनुमति देती है। शोधकर्ताओं को दो या तीन तीखे मुद्दे वाले प्रश्नों (शोध प्रश्नों) के एक समूह की आवश्यकता होती है, जो "अवलोकन, साक्षात्कार, और दस्तावेज समीक्षा की संरचना में मदद करता हैं" (पृष्ठ 20)। वह पर्लेट और हैमिल्टन (1972) के "प्रोग्रेसिव फ़ोकसिंग" (progressive focusing) के विचार पर विश्वास करते हैं, जो इस पूर्वधारणा पर आधारित है कि "अध्ययन के पाठ्यक्रम को पहले से चित्रित नहीं किया जा सकता" (स्टेक, 1998, पृष्ठ 22 में उद्धृत)। गुणात्मक आँकड़ों के स्रोतों	साहित्य समीक्षा सिद्धान्त विकास और शोध डिज़ाइन में योगदान करने वाला एक आवश्यक चरण है। साहित्य समीक्षा से उभरने वाला सैद्धान्तिक ढाँचा शोध प्रश्नों और प्रमुखता के बिन्दुओं को ढालने में मदद करता है। **शोध डिज़ाइन के पाँच चरण** : साहित्य समीक्षा का संचालन करना, एक सैद्धान्तिक ढाँचा तैयार करना, किसी शोध समस्या की पहचान करना, शोध प्रश्नों का प्रारूपण और पैनापन, और प्रतिदर्श (उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन) का चयन करना। गुणात्मक आँकड़ों के स्रोतों का विशेष उपयोग।

रुचि के आयाम	**रॉबर्ट यिन की *केस स्टडी रिसर्च : डिज़ाइन एंड मेथड्स***	**रॉबर्ट स्टेक की *द आर्ट ऑफ़ केस स्टडी रिसर्च***	**शरन मेरियम की *क्वालिटेटिव रिसर्च एंड केस स्टडी एप्लीकेशन्स इन एजुकेशन***
	प्रामाणिक स्रोतों को संयोजित किया जाना चाहिए।	का विशेष उपयोग।	
आँकड़ों का संग्रहण	आँकड़ों का संग्रहण केस स्टडी जाँचकर्ता के कौशल, किसी विशिष्ट मामले के अध्ययन के लिए प्रशिक्षण, जाँच के लिए एक प्रोटोकॉल का विकास, केस स्टडी नामांकन की जाँच (केस के चयन से सम्बन्धित अन्तिम निर्णय लेना), और एक पायलट स्टडी के संचालन से प्रभावित होता है। केस स्टडी शोधकर्ता छह केस स्टडी एकत्र करने वाले साधनों का उपयोग करते हैं : **प्रलेखन**, **पुरालेखीय अभिलेख**, **साक्षात्कार**, **प्रत्यक्ष अवलोकन**, **प्रतिभागी अवलोकन और भौतिक कलाकृतियाँ।**	किसी गुणात्मक केस स्टडी का शोधकर्ता होने के लिए आवश्यक है "यह जानना क्या महत्त्वपूर्ण समझ की ओर जाता है, आँकड़ों के अच्छे स्रोतों को पहचानना, और जानबूझकर और अनजाने में उनकी आँखों की सत्यता और उनकी व्याख्याओं की मजबूती का परीक्षण करना। इसके लिए संवेदनशीलता और संशयवाद की आवश्यकता होती है" (स्टेक, 1995, पृष्ठ 50)। गुणात्मक केस स्टडी करने वाले शोधकर्ता आँकड़ों के एकत्रीकरण के साधनों के रूप में **अवलोकन**, **साक्षात्कार और दस्तावेज समीक्षा** का उपयोग करते हैं।	गुणात्मक केस स्टडी के शोधकर्ता को आवश्यक कौशल अर्जित करने और दस्तावेजों से प्रभावी साक्षात्कार और सावधानीपूर्वक टिप्पणियों के संचालन और आँकड़ों का पता लगाने के लिए कुछ प्रक्रियाओं का अनुपालन करने की आवश्यकता होती है। गुणात्मक केस स्टडी के शोधकर्ताओं ने आँकड़ों के संग्रहण की तीन तकनीकों का उपयोग **साक्षात्कार**, **अवलोकन**, **और दस्तावेजों का विश्लेषण** करने में किया है।
	आँकड़ों के विश्लेषण "में किसी अध्ययन की प्रारम्भिक प्रस्थापनाओं को सम्बोधित करने के लिए मात्रात्मक और गुणात्मक साक्ष्य दोनों की जाँच,	आँकड़ों का विश्लेषण "पहले संस्करणों के साथ-साथ अन्तिम संकलन के लिए अर्थ देने का विषय है" (पृष्ठ 71)।	आँकड़ों का विश्लेषण "आँकड़ों से समझ बनाने की प्रक्रिया है... [जिसमें] लोगों ने जो कहा है और शोधकर्ता ने जो देखा और पढ़ा है उसका समेकन,

रुचि के आयाम	**रॉबर्ट यिन की *केस स्टडी रिसर्च : डिज़ाइन एंड मेथड्स***	**रॉबर्ट स्टेक की *द आर्ट ऑफ़ केस स्टडी रिसर्च***	**शरन मेरियम की *क्वालिटेटिव रिसर्च एंड केस स्टडी एप्लीकेशन्स इन एजुकेशन***
आँकड़ो का विश्लेषण	श्रेणीकरण, सारणीयन, परीक्षण, या अन्यथा पुनर्संयोजन सम्मिलित होता है” (पृष्ठ 109)। **आँकड़ों के विश्लेषण के लिए पाँच प्रमुख तकनीकें :** प्रतिरूप मिलान, स्पष्टीकरण निर्माण, समय-शृंखला विश्लेषण, कार्यक्रम तर्क प्रतिदर्श और क्रॉस-केस संश्लेषण।	आँकड़ों का संग्रहण और विश्लेषण की समकालीनता। **आँकड़ों का विश्लेषण करने के दो रणनीतिक तरीके :** श्रेणीबद्ध एकत्रीकरण और प्रत्यक्ष व्याख्या। "प्रत्येक शोधकर्ता को अनुभव और चिन्तन के माध्यम से, उसके लिए काम करने वाले विश्लेषण के रूपों को खोजने की आवश्यकता होती है” (पृष्ठ 77)।	संक्षिप्तीकरण और व्याख्या करना शामिल है– वह अर्थ निर्माण की प्रक्रिया है” (पृष्ठ 178)। आँकड़ों के संग्रहण और विश्लेषण की समकालीनता। **छह विश्लेषणात्मक रणनीतियाँ** : नृवंशविज्ञान विश्लेषण, विवरणात्मक विश्लेषण, घटनात्मक विश्लेषण, निरन्तर तुलनात्मक विधि, विषय वस्तु विश्लेषण, और विश्लेषणात्मक अनुमान।
आँकड़ों का विधिमान्यकरण	केस स्टडी शोधकर्ताओं को निर्माण वैधता (साक्ष्य के कई स्रोतों, साक्ष्य की शृंखलाओं, और सदस्य जाँच के त्रिकोणीकरण के माध्यम से), **आन्तरिक वैधता** (स्थापित विश्लेषणात्मक तकनीकों जैसे– प्रतिरूप मिलान के उपयोग के माध्यम से), **बाहरी वैधता** (विश्लेषणात्मक सामान्यीकरण के माध्यम से), और **विश्वसनीयता** (केस स्टडी प्रोटोकॉल और आँकड़ा संचय के माध्यम	आँकड़ों के विधिमान्यकरण के मुद्दे त्रिकोणीकरण की धारणा में शामिल हैं **त्रिकोणीकरण के लिए चार रणनीतियाँ** : आँकड़ा स्रोत त्रिकोणीकरण, अन्वेषक त्रिकोणीकरण, सिद्धान्त त्रिकोणीकरण, और प्रविधि सम्बन्धी त्रिकोणीकरण	शोध में विकसित ज्ञान की वैधता और विश्वसनीयता तक गुणात्मक प्रविधि अलग तरीके से बढ़ती है। **आन्तरिक वैधता बढ़ाने के लिए छह रणनीतियाँ :** त्रिकोणीकरण, सदस्य जाँच, दीर्घकालिक अवलोकन, सहकर्मी परीक्षा, सहभागी शोध, और शोधकर्ता पूर्वाग्रह का प्रकटन। **विश्वसनीयता सुनिश्चित करने की तीन तकनीकें** : अध्ययन के सम्बन्ध में शोधकर्ता की अवस्थिति

रुचि के आयाम	**रॉबर्ट यिन की *केस स्टडी रिसर्च : डिज़ाइन एंड मेथड्स***	**रॉबर्ट स्टेक की *द आर्ट ऑफ़ केस स्टडी रिसर्च***	**शरन मेरियम की *क्वालिटेटिव रिसर्च एंड केस स्टडी एप्लीकेशन्स इन एजुकेशन***
	से)।		का स्पष्टीकरण, त्रिकोणीकरण, और किसी अंकेक्षण पदचिह्न का उपयोग। **बाहरी वैधता बढ़ाने की तीन तकनीकें** : प्रगाढ़ विवरण, विशिष्टता या रूपात्मक श्रेणियों, और बहु स्थली डिज़ाइन का उपयोग।

अपनी रुचि के विषय और शोध प्रश्न(नों) के बारे में अपना मन बनाते समय या बाद में आकांक्षी शोधकर्ता अपने अध्ययन के लिए एक शोध प्रविधि की खोज करेंगे। यदि वे केस स्टडी के उपयोग को चुनते हैं, तो वे आमतौर पर दृष्टिकोणों की बहुलता और विभिन्न परिप्रेक्ष्यों से चिह्नित एक विवादित क्षेत्र का सामना करते हैं। चूँकि ये शोधकर्ता इस क्षेत्र में अपना रास्ता चुन रहे हैं तो उनकी मदद करने के प्राथमिक आशय से वर्तमान शोध पत्र कम-से-कम तीन मुख्य तरीकों में उनके लिए महत्त्वपूर्ण हो सकता है जो साधारण केस स्टडी ग्रन्थों से अलग है। सबसे पहले, नए केस स्टडी शोधकर्ता अपने ज्ञानमीमांसीय उन्मुखीकरण और केस स्टडी दृष्टिकोणों, जिनकी ओर उनका रुझान होगा, के बीच के सम्बन्ध को समझेंगे। दूसरे शब्दों में, उन्हें अहसास होगा कि उनके शोध सम्बन्धी निर्णय शैक्षिक शोधकर्ताओं के रूप में उनकी उभरती पहचान को प्रकट करेंगे। दूसरा, इस शोध पत्र में, वे एक और नए केस स्टडी शोधकर्ता के परिप्रेक्ष्य को देखेंगे जो उन समान प्रक्रियाओं (डिज़ाइनिंग और केस स्टडी शोध का संचालन) के माध्यम से किया गया है जिनका वे भी अनुभव कर रहे हैं (करने जा रहे हैं)। तीसरा, इस पत्र में विभिन्न केस स्टडी दृष्टिकोणों के सम्पर्क में आने से, उनके पास प्रत्येक दृष्टिकोण से तत्त्वों (जैसे– विभिन्न शोध तकनीकों और रणनीतियों) को उदारता से संयोजित करने का अवसर होगा जो उनकी डिज़ाइन के लिए सर्वाधिक उपयुक्त और मददगार होगा। इसलिए, मेरा मानना है कि केस स्टडी प्रविधियों के तीन अलग-अलग प्रतिपादनों का यह तुलनात्मक विश्लेषण उभरते हुए शोधकर्ताओं के लिए एक त्वरित सन्दर्भ के रूप में सहायक हो सकता है, जबकि वे अपनी शोध परियोजनाओं की डिज़ाइन और अवधारणा कर रहे होंगे।

References

Baxter, P., & Jack, S. (2008). Qualitative case study methodology: Study design and implementation for novice researchers. *The Qualitative Report, 13*(4), 544-559. Retrieved from http://www.nova.edu/ssss/QR/QR13-4/baxter.pdf

Creswell, J. W., Hanson, W. E., Plano, V. L. C., & Morales, A. (2007). Qualitative research designs selection and implementation. *The Counseling Psychologist, 35*(2), 236-264.

Crotty, M. (1998). *The foundations of social research*. Thousand Oaks, CA: SAGE Publications.

Merriam, S. B. (1998). *Qualitative research and case study applications in education*. San Francisco, CA: Jossey-Bass.

Miles, M. B., & Huberman, A. M. (1994). *Qualitative data analysis: An expanded sourcebook*. Thousand Oaks, CA: SAGE Publications.

Parlett, M., & Hamilton, D. (1976). Evaluation as illumination: A new approach to the study of innovative programmes. In G. Glass (Ed.), *Evaluation studies review annual, I* (pp. 140-157). Beverly Hills, CA: SAGE Publications.

Smith, L. (1978). An evolving logic of participant observation, educational ethnography, and other case studies. In L. Shulman (Ed.), *Review of researching education* (pp. 316-377). Itasca, IL: F. E. Peacock.

Stake, R. E. (1995). *The art of case study research*. Thousand Oaks, CA: SAGE Publications.

Tellis, W. (1997a). Introduction to case study [68 paragraphs]. *The Qualitative Report, 3*(2). Retrieved from http://www.nova.edu/ssss/QR/QR3-2/tellis1.html

Tellis, W. (1997b). Application of a case study methodology [81 paragraphs]. *The Qualitative Report, 3*(3). Retrieved from http://www.nova.edu/ssss/QR/QR3-3/tellis2.html.

Yin, R. K. (2002). *Case study research: Design and methods*. Thousand Oaks, CA: SAGE Publications.

लेखक के बारे में

बेडरैटिन याज़न, अलाबामा विश्वविद्यालय, टस्कलूसा में पाठ्यक्रम और निर्देश विभाग में एक सहायक प्रोफ़ेसर हैं। उनकी शोध रुचियों में भाषा शिक्षक पहचान, केस स्टडी प्रविधि, एक अन्तरराष्ट्रीय भाषा के रूप में अँग्रेजी, ईएसएल और मुख्य धारा के शिक्षकों के बीच सहयोग, और द्वितीय भाषा अर्जन में सामाजिक-सांस्कृतिक सिद्धान्त शामिल हैं। इस लेख के बारे में पत्राचार को सीधे : बेडरैटिन याज़न, 223बी ग्रेव्स हॉल, अलाबामा विश्वविद्यालय, टस्कलूसा, अलबामा 35487 या ई-मेल द्वारा byazan@bamaed.ua.edu के नाम पर किया जा सकता है।

आभार

मैं अपनी प्रिय प्रोफ़ेसर डॉ. बैटी मेलन का इस शोध पत्र के पूर्ववर्ती प्रारूप पर उसकी टिप्पणियों के लिए और पूरी प्रक्रिया में उनके मूल्यवान समर्थन के लिए आभारी हूँ। मैं इस समीक्षा और रचनात्मक प्रतिक्रिया के लिए टीक्यूआर के प्रधान सम्पादक डॉ. रोनाल्ड चेनेल का भी आभारी हूँ, जिससे यह पत्र और प्रभावशाली हो पाया है।

Article Citation

Yazan, B. (2015). Three approaches to case study methods in education: Yin, Merriam, and Stake. *The Qualitative Report, 20*(2), 134-152. Retrieved from http://www.nova.edu/ssss/QR/QR20/2/yazan1.pdf